E – SMRITIKA

"A new chapter. A new dimension. As we step confidently into the future,

"Smritika" our cherished School Magazine, embraces a new and exciting digital era.

We are delighted to present the **23rd Edition** of

"Smritika" — now as "E – Smritika"

Our Digital Annual Magazine. While its format has evolved, its spirit remains unchanged — a celebration of our students' creativity, achievements, aspirations and the vibrant life of our school community. **"E – Smritika"** is more than a Magazine, it is a reflection of our journey, a window into our world, and a celebration of the memories we create together. From pages to pixels, our legacy continues —

Beautifully, Boldly And Digitally.

23rd Edition

E - SMRITIKA

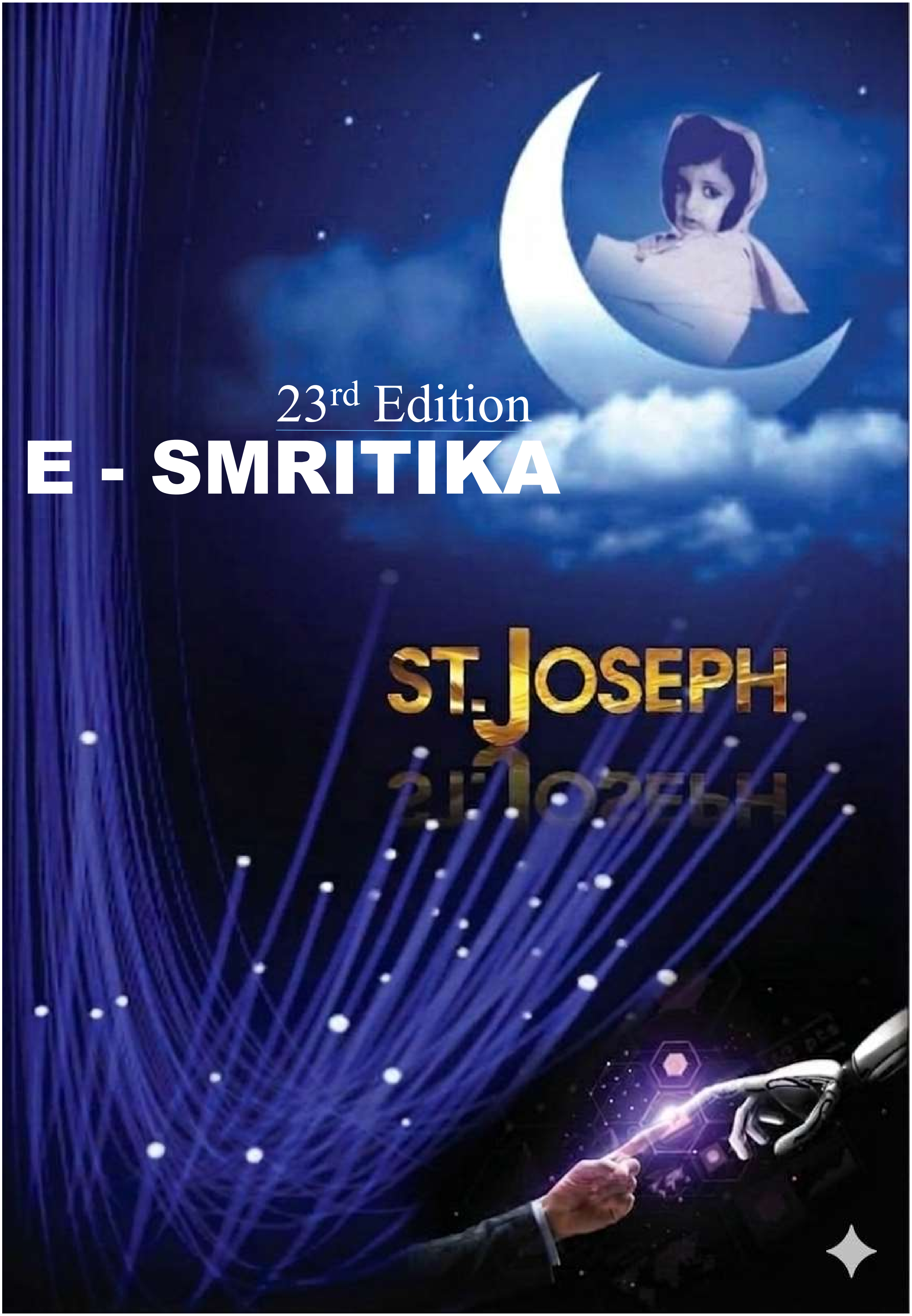

E-SMRITIKA
St. Joseph School
Bajaj Group
St.JOSEPH
St. JOSEPH

"नीरू"

सेन्ट जोज़फ विद्यालय की स्थापना सन् 1987 में हुई।

Creative Minds, Collective Strength

Concept

Smt. Pushplata Agarwal

Founder Chairperson

Editor & Designer

Mrs. Seema Agarwal

Managing Director

Contributors

Principals, Admin Staff, In-charges, Teachers & Students

सम्पादकीय

दिल की कलम से...!

विद्यालय की संस्थापक प्रबंधक श्रीमती पुष्पलता अग्रवाल, जो मेरी माँ भी हैं, के मन में विचार पनपा कि क्यों न अपनी स्वर्गीय बेटी ''निरुपमा'' की याद में एक पत्रिका निकाली जाये, और उद्देश्य था दिवंगत पुत्री को भावभीनी श्रद्धांजलि देना, जिनकी स्मृति में विद्यालय प्रारम्भ किया गया। जब पत्रिका के नाम की बात आयी तो नाम सोचा गया "स्मृतिका", पत्रिका के हर वर्ष प्रकाशन का निर्णय लिया गया इस विचार को पुष्पित-पल्लवित करने के लिए विगत अनेकों वर्षों से पत्रिका का प्रकाशन किया जाता रहा है।

सेंट जोसेफ विद्यालय, ठाकुरगंज शाखा, में मैंने स्वयं इसके संपादन की जिम्मेदारी ली है। प्रत्येक वर्ष अपनी स्वर्गीय बहन के जन्मदिवस पर इस पत्रिका का विमोचन करवाती आयी हूँ और आगे भी कर सकूँ, यही कामना है इसके लिये हृदय तल से ईश्वर की आभारी हूँ कि मुझे इस प्रयोजन में वह सफल करते आ रहे है।

आप सभी से साझा करना चाहूँगी कि मेरे लिये इस पत्रिका का संपादन करना अपनी स्वर्गीय बहन को स्मृति रूपी धन्यवाद अर्पित करना है क्योंकि मेरे जीवन पर अमिट छाप है उनकी मधुर स्मृतियों की, उनके व्यक्तिव की। उनसे मैंने जिंदगी के सही मायने सीखे, उनका मेहनती व्यक्तित्व, परिवार में छोटे-बड़ों को सम्मान, संगीत के प्रति गहरा लगाव, हर काम को सलीके से, कलात्मक ढंग से करना, चाहे वो खाना बनाने की कला या घर सजाने की कला या किसी व्यक्ति के प्रति भी जिम्मेदार बर्ताव, कुछ नया सीखने करने की ललक, उनकी मीठी बोली ये सब मुझे उनकी वजह से बचपन से सीखने को मिला आज भी हर क्षण उनकी ये यादें ये बातें मुझे अपने कर्तव्य पथ पर अडिग रखती हैं। ये सारी बातें कलमबद्ध करते हुए अतीत के गलियारों में जा पहुँची हूँ। आज भी ये बात पूरे परिवार को तसल्ली देती है कि वह ईश्वर को भी बहुत प्यारी लगी इसलिए ईश्वर ने उन्हें अपने पास कहीं बुला लिया।

विद्यालय के परिपेक्ष्य में पत्रिका की बात करूँ तो ,पत्रिका को बहुत मनोयोग से तैयार करना, मेरे लिये सिर्फ एक कार्य नहीं अपितु समर्पण भाव है जो सीखा अपनी माँ से, अपने समस्त परिवार से।

संभव है कुछ त्रुटियाँ रही होंगी, उनके लिये आप सभी सुधी जनों से क्षमाप्रार्थी हूँ। उद्देश्य यही कि पूरे वर्ष के कुछ क्रियाकलापों की झलक दिखा सकूँ पत्रिका के माध्यम से साथ ही जो बच्चे या शिक्षक लेखन कला के प्रति रुचि रखते है, उनकी कलम को भी उड़ान मिले। क्योंकि लेखक बनने की पहली सीढ़ी, छोटी छोटी रचनाएँ ही होती हैं।

अंत में यही कहना चाहूँगी कि भविष्य में भी पत्रिका को अनवरत रूप से संपादित कर पाऊँ ईश्वर से यही आशीर्वाद चाहिए। इस अनूठे कार्य को पूरा करने में जिनका भी सहयोग मिला उन सभी का विशेष आभार!

सीमा अग्रवाल

गुरु वन्दना

परम पूज्य श्री गुरुदेव वंदना

हे मेरे गुरुदेव करुणा सिन्धु, करुणा कीजिये
हूँ अधम आधीन अशरण, अब शरण में लीजिये
सारे जग को छोड़ कर प्रभु, ली शरण अब आपकी
पार करना या न करना, दोनों मर्जी आपकी
आप भी यदि छोड़ देंगे, फिर कहा जाऊँगी मैं
ये अगम भव सिन्धु कैसे, पार कर पाऊँगी मैं
हे मेरे गुरु देव - - - - - - - - -

A Dreamer

A Visionary

Founder Chairperson Honoured with

Shiksha-vid Samman

by H.E. Shri B. L. Joshi, Governor, U.P.

शिक्षा को बनाया हुनर और संवारी ज़िंदगी

ये कहानी है रिद्धी की, जिसकी एक छोटी सी कोशिश ने उसकी ज़िंदगी बदल दी। आप भी अगर अपनी पहचान बनाना चाहती है, तो हिस्सा लीजिए ज़िंदगी की 'मेरी पहचान' वर्कशॉप में। अधिक जानकारी के लिए पढ़ते रहिए हिन्दुस्तान।

'तुमने इतनी पढ़ाई क्यों की? तुम्हें घर ही संभालना था, तो उसके लिए मैट्रिक भी काफी था।' यह ताना सुकेतु अक्सर रिद्धी को सुनाता था। रिद्धी को लगता था कि घर छोड़कर बाहर जाने पर वो घर को पूरा समय नहीं दे पाएगी। उसके दिमाग में सुकेतु की बात गूंजती रहती थी। एक दिन उसने घर में ट्यूशन क्लास खोलने का सुझाव सुकेतु को दिया। उसे सुझाव पसंद आया और दोनों ने घर का एक कमरा ट्यूशन क्लास के लिए तैयार कर लिया।

सुकेतु का साथ मिला तो रिद्धी के अंदर परिवार को समय न दे पाने का डर निकल गया। उसने क्लास का समय अपनी घरेलू जरूरतों के मुताबिक तय कर लिया।

बेटे कार्तिक को वो पढ़ाती थी, उसी की क्लास के कुछ और बच्चे भी अब रिद्धी से पढ़ने के लिए आने लगे।

बच्चों की संख्या और बढ़ने लगी। एक समय ऐसा भी आया जब रिद्धी को क्लास के लिए ज्यादा जगह की जरूरत महसूस होने लगी। घर के पास ही उसने एक जगह देखी और वहां क्लास शुरू कर दी। सुकेतु खुद ऑफिस के बाद वहां आकर दो क्लास लेने लगा।

आज रिद्धी को लगता है कि सुकेतु का साथ न मिला होता तो वो इतना आगे नहीं बढ़ पाती। पढ़ाई तो उसने काफी की थी, मगर घर बैठकर उसे बेकार ही कर रही थी। रिद्धी की तरह कई महिलाएं सोचती रह जाती हैं और वक्त गुजर जाता है।

हम ये भूल जाते हैं कि सिर्फ पढ़ाई करने से तकदीर नहीं बदलती है। तकदीर बदलनी है तो उसके लिए काबिलियत और जोश भी बेहद जरूरी है। जैसा कि रिद्धी ने किया।

ज़िंदगी की पहल 'मेरी पहचान' एक ऐसा मंच है, जहां पर हम और आप मिलेंगे हालात के आगे हार न मानने वाली रिद्धी जैसी शख्सियतों से। इन्होंने न सिर्फ पढ़ाई की अहमियत समझी, बल्कि उसके दम पर अपनी ज़िंदगी संवारी।

Zindagi

Meri Pehchaan

वर्कशॉप की तारीख : 23 फरवरी

समय : 12 बजे से

स्थान : यूपी राजकीय अभिलेखागार, कपूरथला

बदलाव की प्रतीक

वर्कशाप में हमारे साथ होंगी पुष्पलता अग्रवाल। एक कमरे में चंद बच्चों को पढ़ाने से उन्होंने अपने सफर की शुरुआत की। आज सेंट जोजफ स्कूल की पांच शाखाएं है और तकरीबन सात हजार बच्चे यहां शिक्षा ले रहे है।

Dr Pushplata Agarwal

Surrounded by leading academicians, our Founder Chairperson (Mother Ma'am) proudly accepted the doctoral hood and scroll of honor.

Student with the
Smt. Anandiben Patel
(Hon'ble Governor of Utter Pradesh)

The Leaders Don't Create Followers
They Create More Leaders...

श्रीमती पुष्पलता अग्रवाल

संस्थापक प्रबन्धक

हमारे सेंट जोसेफ विद्यालय (बजाज ग्रुप) की ठाकुरगंज शाखा के लिए मुझे आज अपार हर्ष और गर्व की अनुभूति है साथ ही अंतर्मन की गहराइयों से ईश्वर का बारम्बार धन्यवाद और आभार और संस्थान से जुड़े हर व्यक्ति को मेरा आशीर्वाद।सेंट जोसेफ विद्यालय परिवार की स्थापना सन् 1987 में राजाजीपुरम में एक छोटे से पौधे के रूप में हुई थी। अपनी ज्येष्ठ पुत्री निरुपमा के सन् 1983 में असामयिक निधन के पश्चात, मन व्यथित था, क्षति अपूरणीय थी। दिवंगत पुत्री की स्मृति में बेटियों के लिए एक विद्यालय प्रारंभ करने का निश्चय किया गया एवं 14 अप्रैल 1987 को सेंट जोसेफ विद्यालय परिवार की प्रथम शाखा राजाजीपुरम में विधिवत शुरू हुई। कालांतर में जन-मानस की माँग पर इस शाखा में बेटियों के साथ ही साथ बेटों को भी शिक्षा प्रदान की जाने लगी।विद्यालय को यू पी बोर्ड के साथ ही आई.सी.एस.ई. दिल्ली बोर्ड की भी मान्यता प्राप्त हुई और बच्चे शत्-प्रतिशत रिजल्ट देने लगे। सभी छात्र-छात्राएँ पढ़ाई के अतिरिक्त सभी क्षेत्रों में उपलब्धियाँ हासिल करने लगे।आरम्भ ही से अपने उत्कृष्ट शत्-प्रतिशत बोर्ड परीक्षा परिणाम हेतु शिक्षा विभाग द्वारा विद्यालय की शाखाओं को गौरवपूर्ण (ए) श्रेणी द्वारा सम्मानित किया जाता रहा है इसके अतिरिक्त समय-समय पर होने वाली विभिन्न शैक्षणिक क्रिया-कलापों में चाहे वह पढ़ाई से सम्बन्धित हो या खेलकूद से सांस्कृतिक अथवा अन्य क्षेत्र, स्तर चाहे जनपदीय, मण्डल, राज्य या राष्ट्रीय हो यहां की प्रतिभाओं ने सदैव अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन से सभी को चमत्कृत किया है। खेलकूद में विभिन्न खेलों में यहाँ के खिलाड़ियों ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक अपनी धाक जमा कर विद्यालय का नाम रोशन किया है। शिक्षा क्षेत्र में होने वाले किसी भी स्तर के क्रिया कलापों में सेन्ट जोसेफ के अलग अलग शाखाओं के बच्चों की उपस्थिति अनिवार्य रही और वहाँ अपनी छाप छोड़कर विजयी होना यहाँ के बच्चों की विशेषता है। किसी भी क्षेत्र में बच्चें प्रतियोगिताओं में पहुँचे तो अधिकांशतः विजयी हो लौटे जो की विद्यालय की बहुमुखी श्रेष्ठता का प्रमाण है।राजाजीपुरम विद्यालय की स्थापना के लगभग 16 वर्ष बाद सभी प्रबंधन के लोगों का विचार बना कि अब विद्यालय परिवार को राजाजीपुरम के बाहर भी बच्चों को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा उपलब्ध करायी जाये, इसी क्रम में सन् 2003 में ठाकुरगंज, हरदोई रोड पर सेंट जोसेफ इंटर कॉलेज के भवन का निर्माण शुरू हुआ शाखा प्रारंभ हो गयी और विधिवत उदघाटन 2004 में हुआ। यह शाखा आर एस बजाज सोसाइटी के अन्तर्गत संचालित हो रही है जिसका प्रबंधन मेरी पुत्री श्रीमती सीमा अग्रवाल एवम् राजेश अग्रवाल कुशलता पूर्वक देख रहें हैं।

इस विद्यालय का प्रारंभ एक व्यावसायिक भवन में हुआ था एवं कुछ वर्षों तक इसकी सीनियर क्लासेज किराए के भवन में भी संचालित की गीं। अल्पावधि में ही इस शाखा को आसपास के लोगों का अभूतपूर्व सहयोग एवं विश्वास मिला और आवश्यकता महसूस हुई कि विद्यालय को अपना एक बड़ा भवन चाहिए। इसी क्रम में प्रयास किए गये और विद्यालय के ओल्ड कैंपस के पास ही एक बड़ी भूमि क्रय की गई एवं आवश्यक औपचारिकताओं के बाद विद्यालय का नवीन भवन बनकर सन् 2015 में बनकर तैयार हुआ।हमारे भवनों में शिक्षा से संबंधित सभी आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध है। साथ ही साथ सीसीटीवी कैमरा, वाई-फाई, फायर अलार्म सिस्टम, सोलर पैनल, साइलेंट जनरेटर, एयर कंडीशंड ऑडिटोरियम, सभी साइंस लैब्स, पुस्तकालय, खेल मैदान इत्यादि से सुसज्जित भवन में सभी बच्चे एक अनुकूल वातावरण में समग्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। आज का युग कंप्यूटर शिक्षा का है। रोबोटिक्स एवं आर्टिफीशियल इंटेलिजेंस ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपना प्रभाव दिखाना आरंभ कर दिया है। समय के साथ कदम से कदम बढ़ाते हुए, विद्यालय ने अपने कैंपस में रोबोटिक्स लैब स्थापित कर बच्चों को आधुनिक युग के साथ कदमताल करते हुए आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त किया है।समय बड़ी गति से आगे बड़ रहा है। हमारा विद्यालय इस क्षेत्र में एक लैंडमार्क बन चुका है। बच्चों के लिए इस विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करना गौरव की बात बन चुकी है। विद्यालय से उत्तीर्ण छात्र-छात्राएँ जीवन के हर क्षेत्र में सफलता का परचम लहरा रहे हैं। विद्यालय की एक छात्रा ने बोर्ड परीक्षा में 99.50 प्रतिशत अंक प्राप्त करके आल इंडिया द्वितीय स्थान प्राप्त किया था। विद्यालय न केवल शिक्षा के क्षेत्र में अपितु बच्चों को एक सफल व जिम्मेदार नागरिक बनकर अपने देश एवं समाज के लिए कार्य करने के लिए तैयार करता है।आज देश हर क्षेत्र में उन्नति कर रहा है। अभी हाल ही में देश के वैज्ञानिकों ने चंद्रयान-3 की चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर ऐतिहासिक सफल सॉफ्ट लैंडिंग करायी है। ऐसी सफलता हासिल करने वाला हमारा देश विश्व का प्रथम देश बन गया है। इस सफलता पर सभी देशवासियों को गर्व है। इस सफलता से हमारी पुरानी सोच को और भी बल मिलता है कि असफलता से हार नहीं जाना चाहिए बल्कि मंथन करना चाहिए कि प्रयास में कहाँ कमी रह गई थी और पुनः और भी अधिक प्रयत्नों से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में जुट जाना चाहिए। यही कारनामा हमारे इसरो के अपने मिशन को फोकस करते हुए अंततः स्वर्णिम सफलता हासिल की। और कदम यहीं रुके नहीं, बल्कि एक कदम और आगे बढ़ाते हुए अब सूर्य यान "आदित्य - एल1" भी अपनी मंजिल की ओर बढ़ चला है। और इसी तरह हमारे देश के खिलाड़ी भी सभी खेलों में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त कर देश के मान सम्मान को शीर्ष पर पहुँचा।आर एस बजाज सोसाइटी के अन्तर्गत ही लखनऊ के समीप, आमों के बागों के गाँव- मलिहाबाद में भी एक शाखा का संचालन किया जा रहा है। यह शाखा सन् 2018 में अस्तित्व में आयी। मलिहाबाद में विद्यालय प्रारंभ करने के पीछे सिर्फ एक ही सोच थी, एक ही उद्देश्य था, वो ये कि विद्यालय प्रबंध को इस बात का एहसास था कि मलिहाबाद-रहीमाबाद के ग्रामीण क्षेत्रों के अधिकांश बच्चे शिक्षा के लिए लखनऊ नहीं आ पाते और अंततः अच्छी शिक्षा से वंचित रह जाते। तो ये सोचा गया कि हम एक प्रयास करते हैं जिसमें बच्चों को उन्हीं के गाँवों में जाकर शिक्षा उपलब्ध करायी जाये। हमारा ये प्रयास सफल और सार्थक हुआ है इसके लिए हम ईश्वर को धन्यवाद देते हैं।आप सभी शुभचिंतकों और अभिभावकों से ये भी साझा करते हुए गौरवान्वित हूँ कि विद्यालय में आयोजित विभिन्न समारोहों के अवसर पर अनेक महान एवं ख्यातिलब्ध प्रतिष्ठित विभूतियों का आगमन हुआ। महामहिम राज्यपाल श्री बी० सत्यनारायण रेड्डी, स्मृतिशेष महामहिम विष्णुकान्त शास्त्री जी, मुख्यमंत्री राम प्रकाश गुप्ता सहित अनेकों अनेक सम्माननीय प्रसिद्ध व्यक्तियाँ ने विद्यालय की विभिन्न शाखाओं में पधार कर समस्त सेंट जोसेफ परिवार को गौरवान्वित किया है।आज भले ही देखने में सबकुछ आसान लगता हो परन्तु इसके अतीत में सहयोग है विद्यालय परिवार के कर्मठ, कर्मयोगी सदस्यों की कर्मप्रदान भावना तथा संस्था के प्रति समर्पण भाव का। यह विद्यालय का सौभाग्य है कि परिवार का प्रत्येक सदस्य अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक है तथा उनका निर्वहन पूरी ईमानदारी व सत्यता से करता है, विद्यालय परिवार के प्रत्येक सदस्य का अविस्मरणीय योगदान है। विद्यालय के संरक्षक स्मृतिशेष श्री आर०के० सक्सेना के महान योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता है। विद्यालय के वरिष्ठतम सदस्य श्री एस. एस. सक्सेना का सहयोग एवं मार्गदर्शन अनुकरणीय रहा। एवम् अन्य कई महत्वपूर्ण लोग जो विद्यालय के मार्गदर्शक रहे आज वो सभी हमारे बीच नहीं उन सभी को भावभीनी श्रद्धांजलि।

उन्नति एवं सफलता की इस यात्रा में समस्त अभिभावकों एवं बच्चों का पूर्ण सहयोग रहा जिनके बिना आज इस मुकाम पर पहुँचना संभव नहीं था। इस अवसर पर मैं उन सभी सहयोगियों, शुभचिंतकों, विद्यालय प्रबन्धन एवं सारी समितियों के सदस्यों का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने हरपल हमें मार्गदर्शन एवं सहयोग दिया है उन सभी की बहुत-बहुत आभारी हूँ और अन्त में उस परमपिता परमात्मा की कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।जिनकी अपार कृपा से ही इस गुरुतर कार्य को करने की प्रेरणा एवं शक्ति मिली। अपने कर्तव्य का निर्वहन पूर्ण निष्ठा से करने में आप सभी का सहयोग आगे भी सदैव अपेक्षित है।सेन्ट जोसेफ माण्टेसरी से सेन्ट जोसेफ ठाकुरगंज, सेंट जोसेफ अंसल ब्रांच से सेंट जोसेफ सीतापुर रोड का और सेंट जोसेफ मलिहाबाद से सेंट जोसेफ रुचि खंड तक का सफर संघर्षों और कठिनाइयों से परिपूर्ण रहा है। लेकिन समस्त स्कूल प्रबंधन अपने कर्तव्य पथ पर दृढ़ता से अग्रसर है उन्हीं आस्था संस्कारों और आदर्शों और विचारों की डोर को कसकर थामे जिस सोच से विद्यालय की नींव रखी गयी थी और इसके लिए मैं पुनः ईश्वर की आभारी हूँ और स्वयं को भाग्यशाली पाती हूँ कि पिछले कई वर्षों से विद्यालय की अपनी अपनी विभिन्न शाखाओं का संचालन हमारे सभी शाखाओं प्रबन्ध निदेशक पूर्ण कुशलता और आस्था से कर रहे।एक बार पुनः अतीत के गलियारों में जहाँ जा पहुँची हूँ कि कैसे 14 अप्रैल 1987 में सेन्ट जोसेफ प्राइमरी स्कूल का नन्हा पौधा रोपित किया, कुछ लोगों का छोटा परिवार आज लगभग 900 से अधिक कर्मयोगियों का विशाल परिवार बन चुका है। प्रगति की इस यात्रा में विद्यालय अनेक सफलताओं और उपलब्धियों का मूक गवाह बना, न जाने कितने नये आयाम स्थापित हुए, हर सफलता, हर उपलब्धि ने एक नया इतिहास रचा। यह भी एक सुखद संयोग ही है कि आज निरन्तर सफलता के सोपनों पर चढ़ते हुए विद्यालय ने आज उन्नति के शिखर को मात्र छुआ ही है और इसी बीच मन मस्तिष्क में कई स्वप्न पनपे है जिनको पूर्ण करने की अभिलाषा है।मैं विद्यालय (बजाज समूह) की ठाकुरगंज शाखा में दिवंगत पुत्री "निरुपमा" की याद में हर वर्ष निकाले जाने वाली स्कूल मैगजीन "स्मृतिका" के विमोचन के लिये अग्रिम शुभकामनाएँ सीमा अग्रवाल को देती हूँ जो विगत कई वर्षों से बहुत मनोयोग से पत्रिका का संपादन करती आ रही हैं एवम् स्कूल प्रिंसिपल्स और समस्त विद्यालय परिवार को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देती हूँ और ईश्वर से कामना करती हूँ कि वह हम सभी को शक्ति प्रदान करे जिससे हम अपने कर्तव्य पथ पर पूरे आत्मविश्वास, जोश, ईमानदारी एवं सत्यनिष्ठा से अग्रसर रहें और राष्ट्र व समाज को स्वस्थ दिशा एवं गति दे सकें।

जय हिन्द जय भारत !

जीत के लिए जूनून चाहिए, आत्मविश्वास रगों मे खूब चाहिए,
ये आसमान भी आएगा ज़मी पर, बस इरादों में जीत की गूँज चाहिए।

The Success Story!

Build special capacities though the education system to enable student growth and contribute towards economoic development

-A.P.J. Abdul Kalam
Former President of India.

Life without struggle is literally food without sauce. Struggles develop our perspective, make us patient and if taken in a positive way, they make us strong, Same has been the story of the progress of St. Joseph. We along with the dedicated staff kept on facing all the challenges and enjoying the success achieved by the institution, Dear parents, the real purpose of education is not just gaining knowledge in various fields but also thinking in a rational and progressive way. Change is the only constant in this world, and we here at St. Joseph endeavor to prepare our students to face all the challenges with determination, self-confidence and faith in god. Our sole aim is to mould our students in a way, that every individual connects with his inner-self, his social-self, nature and God in a perfect harmony.

St. Joseph is one such place where the child not only grows, but also develops in both emotional and subconscious manner. Learning to take risks, facing challenges, becoming independent in their thinking, creating lifelong bonds with each other, and making every moment worth remembrance, is what children learn here.

Dear students, St. Joseph is St. Joseph only because of you. You are the real wealth of our college and we are proud that you are studying in one of the best institutions of the city. The college is recognized not just in the field of academics but also in the field of sports, theatre and other co-curricular activities. We provide you with a stage for your dreams, and it is your hard work, zest, knowledge and intellect that will help you in making your dreams turn into reality, Have goals and desires and work on them to be an achiever. Let your light shine! Let your dreams come true!

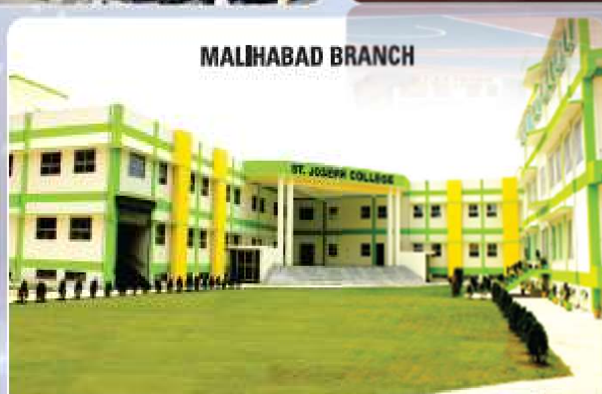

Dear Parents,
In the heart of Thakurganj, nestled within the Bajaj Group, stands St. Joseph Inter College, a haven of holistic education, where the nurturing touch of a mother's heart finds its expression in every facet of learning. As the Managing Director and a mother myself, I understand that the well-being and growth of our students extend far beyond the boundaries of textbooks and classrooms. Here at St. Joseph Inter College, we have always believed that the most overwhelming key to a child's success lies in the positive involvement of parents and teachers in every aspect of their lives. Our journey to excellence begins with the unwavering support of parents and the dedicated guidance of teachers. Parents, you are our partners in shaping the future of your children, and teachers, you are the potters and carvers molding their behavior and abilities, Your active participation and genuine care lay the foundation for our students' success. We value our principle of respecting each child's individuality. In our nurturing environment, we teach our students that it's not just about scoring high grades but also about becoming responsible, ethical individuals who contribute positively to society. As a mother, I know that a child's health and well-being are paramount. It's not just about academic achievements; it's about nurturing happy and healthy young individuals.

We prioritize their physical and mental health, ensuring a stress-free learning environment where they can thrive. Our students are not just scholars; they are artists, athletes, and innovators. We encourage them to explore their creative sides, participate in extracurricular activities, and develop skills that transcend the classroom. Our teachers are not just educators; they are genuine well-wishers who go above and beyond to guide and mentor our students. We understand that their role extends far beyond the classroom, and we value their dedication. We believe that resources should never go to waste. We are committed to ensuring that every activity is conducted efficiently and effectively, keeping in mind the hard-earned money of parents. Our approach is to do more with less, making every endeavor worthwhile. In conclusion, St. Joseph Inter College is not just an educational institution; it's a family that believes in nurturing excellence in every student. We aim to inspire, encourage, and uplift our students to achieve their fullest potential. Together with parents, teachers, and students, we will continue to scale greater heights of achievement, always keeping the warm and inspiring spirit of our school alive.

Nurturing Excellence : A Message from the Heart

Mrs. Seema Agrawal
Managing Director
Thakurganj and Malihabad Branch

For St. Joseph Inter College, Bajaj Group, it is with immense pride and gratitude that I share with you the remarkable journey of our institution. Over the years, our school has not only maintained its reputation for academic excellence but has also emerged as a beacon of holistic education, nurturing young talents who have gone on to make their mark not only locally but on a national scale. At the heart of our success story are the exceptional academic achievements of our students. Year after year, our students have outperformed expectations, securing top ranks in board examinations. The relentless dedication of our teaching staff, coupled with our robust curriculum, has consistently produced outstanding results. But what truly sets us apart is our commitment to fostering all-round development, St. Joseph Inter College (Bajaj Group) believes in shaping not just brilliant minds but also making them responsible and well-rounded individuals.

We encourage our students to participate in a wide array of extracurricular activities, ranging from sports and cultural events to community service and environmental initiatives. It's this emphasis on nurturing talents beyond the classroom that has helped our students shine in various domains. Our students have proven time and again that they are not just scholars but also achievers in the truest sense. Our Country Bharat as a nation is marching ahead in all fields especially Science & Technology, Economic forum and Sports. Recently, ISRO has successfully launched Chandrayaan-3 and our country has become the First Nation to soft land our lander Pragyan on South Pole of moon. This has happened after the failure of Chandrayaan-2, four years ago. This proves that practice makes a man perfect. The ISRO overcame the shortcomings of last Mission and launched the present mission with 100% accuracy. To educate and make the young minds to learn the robotics and E-coding, our school has already made the robotics lab functional and children are learning at a fast track. It seems that our sportspersons are not behind. When Olympic Gold, medalist Neeraj Chopra throws the javelin off in the sky, it looks like it would also touch the moon, and it gets converted into Gold medal. As we look ahead, we are filled with hope and excitement for the future.

The world is changing rapidly, and so are the challenges and opportunities it presents. St. Joseph Inter College, Bajaj Group, remains steadfast in its commitment to nurturing young minds, preparing them to excel in every sphere of life, and making not only their parents proud but the entire nation.

In conclusion, our school's journey is a testament to the power of education and the potential of young minds. We remain inspired by the achievements of our students and the accomplishments of our nation, and we are more determined than ever to continue our pursuit of excellence in education. Together, we shall forge ahead, creating a brighter, more promising future for our students and our beloved Bharat. Thank you for being a part of our remarkable journey.

***Er. Rajesh Agrawal** IES (Retd)*
Managing Director
Thakurganj and Malihabad Branch

Picture Speaks More Than Words

The strength of the team is each member.
The strength of each member is the team.

'Choosing St. Joseph Thakurganj, Bajaj Group for our son , Shubham Gautam , has been one of the best decisions for his academic and personal growth. The school's nurturing environment, dedicated teachers, and innovative teaching approaches have made learning both enjoyable and meaningful. The individual attention given to each student, along with a balanced focus on academics, creativity, and character development, has helped Shubham gain confidence and a genuine love for learning. We highly value the school's commitment to student well-being, safety, and strong parent-school collaboration. We are grateful to be part of the St. Joseph Thakurganj, Bajaj Group family '

>Mr. Sanjay Kumar & Mrs. Usha ,
Parents of Shubham Gautam.

Parent Testimonial

Ishika Saxena

Name

St. Joseph Inter College, Bajaj Group

Since Class 3

"Ishika has been a part of St. Joseph Inter College, Bajaj Group, since Class 3, and we are thankful for the role the school has played in her journey. Over the years, she received encouragement from teachers who motivated her, supported her during important moments and showed confidence in her abilities. The school has been a part of many meaningful experiences, friendships and memories that she will always cherish. We are sincerely thankful to St. Joseph Inter College for being a part of her growing years and for the guidance, support and experiences that have made her school journey a memorable one."

Sanjai Saxena and Indu Saxena
Parents of Ishika
Balaganj, Lucknow

VOICES FROM THE HEARTH: GUARDIANS OF TOPPERS REFLECT ON THE JOURNEY...

Choosing St. Joseph Inter College was a very grateful decision for me. This school has not only given me quality education, but also a safe and supportive environment where I could grow, learn and discover my abilities.

Throughout Class 10, the school provided valuable resources such as board enrichment classes, question banks and regular assessments, which helped me build confidence and improve my performance.
The teachers' dedication, guidance and constant encouragement played a big role in shaping my journey.

Apart from studies, the school also organised various co-curricular activities, which taught us teamwork, discipline and leadership. My parents have always stood by me with their love and support, but I am truly grateful to the school for giving me the right direction, the right opportunities and the right people at every step.

Overall, my Class 10 journey has been a valuable and memorable experience, and I will always be thankful to St. Joseph Inter College for everything.

Student's Name:
Aditya Awasthi

Parent's Name:
Anupam Awasthi
Vandana Awasthi

UPDATED TESTIMONIAL

"My journey with this school has been nothing short of extraordinary. Having joined the school in Playgroup and now being in Class 11, I have grown up alongside this institution, carrying with me countless memories, lessons, friendships, and experiences that have shaped the person I am today. Over the years, my school has been much more than a place of education—it has been a second home where I have always felt encouraged to learn, explore, dream, and become a better version of myself."

Anchal Rastogi and Neha Rastogi
Parents of Aanya Rastogi

UPDATED TESTIMONIAL

'Choosing **St. Joseph Thakurganj, Bajaj Group** for our daughter, **Tanmay Shukla** has been one of the best decisions for her academic and personal growth. The school's nurturing environment, dedicated teachers, and innovative teaching approaches have made learning both enjoyable and meaningful. The individual attention given to each student, along with a balanced focus on academics, creativity, and creativity, and character development, has helped Tishya gain confidence, independence, and a genuine love for learning. We highly value the school's commitment to student well-being, safety, and strong parent-school collaboration. We are grateful to be part of the St. Joseph Thakurganj, Bajaj Group family as and look forward to seeing Tishya continue to thrive in this inspiring environment.'

Mr. Amitendra Shukla and Mrs. Deepa Shukla parents of Tanmay Shukla, grade 12, St. Joseph Thakurganj, Bajaj Group

UPDATED TESTIMONIAL

'Choosing **St. Joseph Thakurganj, Bajaj Group** for our **Son Arnav Singh** has been one of the best decisions for her academic and personal growth. The school's nurturing environment, dedicated teachers, and innovative teaching approaches have made learning both enjoyable and meaningful. The individual attention given to each student, along with a balanced focus on academics, creativity, and creativity, and character development, has helped **Arnav** gain confidence, independence, and a genuine love for learning. We highly value the school's commitment to student well-being, safety, and strong parent-school collaboration. We are grateful to be part of the St. Joseph Thakurganj, Bajaj Group family as and look forward to seeing **Arnav** continue to thrive in this inspiring environment.'

> **Farmer Mr. Durgesh Kumar Singh And Mrs. Rekha Singh Parents Of Arnav Singh , Section- D**
St. Joseph Thakurganj, Bajaj Group

UPDATED TESTIMONIAL

'Choosing **St. Joseph Thakurganj, Bajaj Group** for our daughter, **Tanya Khare**, has been one of the best decisions for her academic and personal growth. The school's nurturing environment, dedicated teachers, and innovative teaching approaches have made learning both enjoyable and meaningful. The individual attention given to each student, along with a balanced focus on academics, creativity, and creativity, and character development, has helped Tanya gain confidence, independence, and a genuine love for learning. We highly value the school's commitment to student well-being, safety, and strong parent-school collaboration. We are grateful to be part of the St. Joseph Thakurganj, Bajaj Group family as and look forward to seeing Tanya continue to thrive in this inspiring environment.'

> Rajesh Kumar Khare & Shalini Khare,
Parents of Tanya Khare,
Sarai Mali Khan Chowk Lucknow

UPDATED TESTIMONIAL

'Choosing St. Joseph Thakurganj, Bajaj Group for our son, Yuvraj Tiwari, has been one of the best decisions for his academic and personal growth. The school's nurturing environment, dedicated teachers, and innovative teaching approaches have made learning both enjoyable and meaningful. The individual attention given to each student, along with a balanced focus on academics, creativity, and creativity, and character development, has helped Yuvraj gain confidence, independence, and a genuine love for learning. We highly value the school's commitment to student well-being, safety, and strong parent-school collaboration. We are grateful to be part of the St. Joseph Thakurganj, Bajaj Group family as and look forward to seeing Yuvraj continue to thrive in this inspiring environment.

> **Bussinessmen Prince Tiwari & Mrs. Priyanka Tiwari, Parents of Yuvraj Tiwari, Grade 12, St. Joseph Thakurganj, Bajaj Group**

नाज़ुक मन के ये सितारे — Handle with Care

हर बच्चा अपने साथ एक छोटी-सी दुनिया लेकर स्कूल आता है।
किसी की दुनिया सपनों से भरी होती है, किसी की सवालों से और किसी की ऐसी बातों से, जिन्हें वह किसी से कह नहीं पाता।
इसलिए बच्चों को केवल students नहीं, बल्कि growing human beings की तरह देखना जरूरी है।
हर विद्यालय बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए लगातार प्रयास करता है। Management हो, Principal हो, Coordinator हो या Teacher—हर व्यक्ति की कोशिश एक ही है कि हमारे बच्चे अच्छी शिक्षा के साथ अच्छे, confident और responsible इंसान बनें।
Parents भी अपनी तरफ से पूरी मेहनत करते हैं।
फिर भी कभी-कभी एक सवाल मन को परेशान करता है—
जब हम सब इतना कुछ कर रहे हैं, तो कुछ बच्चे स्कूल से दूर क्यों होते जा रहे हैं?
किसी दिन बच्चा school नहीं आता।
किसी दिन वह बिना पूरी books और copies के आता है। कभी homework नहीं होता।
कभी class में teacher की बात ध्यान से नहीं सुनी जाती।
कभी subject teacher समझा रहे होते हैं और बच्चा अपनी ही दुनिया में खोया होता है।
और धीरे-धीरे learning में gap बढ़ता जाता है।यह केवल एक teacher की समस्या नहीं है।
यह हम सबकी shared responsibility
सबसे बड़ी जिम्मेदारी है ऐसा school environment बनाना जहाँ बच्चा सुरक्षित महसूस करे, teacher सम्मान के साथ काम करे और parents को लगे कि school और home एक ही दिशा में चल रहे हैं।
Principal ,vice principals और Coordinator को केवल discipline देखने वाला नहीं, बल्कि direction देने वाला होना पड़ता है।
किस बच्चे को extra support चाहिए?
कौन लगातार absent है?
किस बच्चे की performance अचानक गिर रही है?
कौन quietly struggling कर रहा है?
इन छोटे संकेतों को समय पर पहचानना बहुत जरूरी है।
Teacher की जिम्मेदारी
एक teacher के लिए सबसे आसान है कहना—
“इस बच्चे को पढ़ाई में interest नहीं है।”
लेकिन एक अच्छे teacher का अगला सवाल होना चाहिए—
“क्यों नहीं है?”
कभी बच्चे को विषय समझ नहीं आता।
कभी वह पूछने से डरता है।
कभी उसका confidence कम होता है।
और कभी उसके मन में कुछ ऐसा चल रहा होता है, जिसके बारे में हमें पता ही नहीं।
Teacher का एक encouraging sentence बच्चे को बदल सकता है।
“You can do better. I believe in you.”
कभी-कभी यही sentence बच्चे के अंदर बुझती हुई उम्मीद को फिर जगा देता है।
Parents की जिम्मेदारी
Parents से एक छोटी-सी request है—
बच्चे से केवल यह न पूछें,
“आज कितने marks मिले?”
कभी यह भी पूछें,
“आज school कैसा रहा?”
“किसी बात ने परेशान तो नहीं किया?”
“कौन-सा subject difficult लग रहा है?”

बच्चे का bag check करना जरूरी है, लेकिन केवल यह देखने के लिए नहीं कि books और copies हैं या नहीं।
यह देखने के लिए भी कि बच्चा कैसा है।
उसकी routine कैसी है?
वह पर्याप्त सो रहा है या नहीं?
क्या वह बहुत ज्यादा screen पर है?
क्या उसके पास पढ़ने का शांत समय है?

और अब हमारे बच्चों से…
हम आपसे perfect होने की उम्मीद नहीं करते।
गलतियाँ होंगी।
कभी homework छूटेगा।
कभी कोई book भूल जाएगी।
कभी मन पढ़ाई में नहीं लगेगा।
यह सब normal है।
लेकिन बार-बार वही गलती करना और फिर सुधारने की कोशिश न करना—यह आपके अपने future के साथ अन्याय है।
School आना केवल attendance पूरी करना नहीं है।
School आना अपने future के लिए present रहना है।
Books और copies लेकर आना छोटी बात लग सकती है, लेकिन यह responsibility की पहली सीढ़ी है।
Teacher की बात सुनना केवल discipline नहीं है।
यह अपने learning के प्रति respect है।
और जब कोई teacher आपको बार-बार समझाता है, याद दिलाता है या सुधारता है, तो हमेशा यह मत सोचिए कि वह आपको परेशान कर रहा है।
कभी यह भी सोचिए—
"शायद कोई मेरे future को लेकर मुझसे ज्यादा serious है।"

Handle with Care

हम बच्चों को प्यार से संभालना चाहते हैं, लेकिन प्यार का अर्थ हर गलती को नजरअंदाज करना भी नहीं है।
Care और Discipline—दोनों जरूरी हैं।
बच्चे को डराकर नहीं, समझाकर जिम्मेदार बनाना है।
उसे दबाव देकर नहीं, विश्वास देकर आगे बढ़ाना है।
और उसे हर बार बचाकर नहीं, धीरे-धीरे अपने काम की जिम्मेदारी लेना भी सिखाना है।
क्योंकि हमारा उद्देश्य केवल यह नहीं कि बच्चा आज अच्छा करे।
हम चाहते हैं कि वह कल बिना किसी के याद दिलाए सही काम करना सीखे।

एक छोटी-सी उम्मीद

अगर Management अपना best दे,
Principal direction दे,
Coordinator हर बच्चे पर नज़र रखे,
Teacher दिल से पढ़ाए,
Parents घर से साथ दें,
और बच्चा खुद थोड़ा-सा प्रयास करे—
तो कोई कारण नहीं कि हमारा बच्चा पीछे रह जाए।

शायद हमें बच्चों से बहुत बड़े बदलाव की जरूरत नहीं है।
बस शुरुआत इन छोटी बातों से हो—
समय पर स्कूल आना।
पूरी books और copies लाना।
Teacher को ध्यान से सुनना।
अपना काम समय पर करना।
और जहाँ समझ न आए, वहाँ पूछना।
इतना-सा बदलाव धीरे-धीरे बहुत बड़ा फर्क पैदा कर सकता है।

अंत में बस इतना—

बच्चे हमारे लिए केवल report cards, attendance numbers या class lists नहीं हैं।

वे हमारे आज की जिम्मेदारी और कल की उम्मीद हैं। उनके छोटे-से व्यवहार में उनका बड़ा भविष्य छिपा है। इसलिए— उन्हें संभालिए, लेकिन इतना नहीं कि वे खुद संभलना भूल जाएँ। उन्हें समझाइए, लेकिन इतना नहीं कि वे डरने लगें। उन्हें अनुशासन दीजिए, लेकिन उनके सपनों की कीमत पर नहीं। क्योंकि ये बच्चे सचमुच नाज़ुक मन के सितारे हैं। उन्हें चमकने के लिए केवल रोशनी नहीं चाहिए।

उन्हें हमारा विश्वास, हमारा धैर्य और उनका अपना प्रयास—तीनों चाहिए।

Handle with Care.
Handle with Love.
And most importantly—
Handle with Hope.

- प्रबंधन

English: A Language That Opens Doors

"A different language is a different vision of life."
In today's world, English is much more than a school subject. It is a language that connects us with people, knowledge and opportunities across the world.
But learning English is not about speaking perfect English. It is about having the confidence to express yourself.
A student who reads English regularly learns new words, new ideas and new ways of looking at the world. Writing helps us organize our thoughts, while speaking teaches us to express those thoughts with confidence.
s the saying goes:
"The more you read, the more you know.
The more you learn, the more you grow."
Many students hesitate to speak English because they are afraid of making mistakes. But mistakes are a natural part of learning.
"Do not be afraid to make mistakes. Be afraid of not trying."
Every great speaker was once a beginner. Every good writer once struggled to write a sentence. What made them better was simple—they kept practicing.
For students, the message is simple:
Read a little every day.
Write something every day.
Speak whenever you get a chance.
And never be ashamed of making mistakes.
And there is an important role for every teacher and every member of the school community.
A child does not learn confidence only from textbooks. A child learns confidence from the environment around them. When we listen patiently, encourage every attempt and correct mistakes kindly, we give a child the courage to speak again.
Let our classrooms become places where students are not afraid to say, "I want to try."
Because the purpose of learning a language is not to impress others.
It is to express ourselves, understand others and discover a bigger world.
English can open many doors.
But confidence is the key that helps us walk through them.
"Learn a language. Find your voice. Open your world."

- Principal

बच्चों का बिखरता ध्यान — क्या हम उन्हें सुन रहे हैं?

आजकल माता-पिता और शिक्षक अक्सर एक बात कहते सुनाई देते हैं—
"बच्चे पहले की तरह ध्यान नहीं लगाते।"
कक्षा में कुछ मिनट बैठना मुश्किल, किताब पढ़ते-पढ़ते मन भटकना, पढ़ाई के बीच बार-बार मोबाइल देखना और एक काम पूरा करने से पहले दूसरे काम की ओर बढ़ जाना—यह आज के कई बच्चों की रोज़मर्रा की चुनौती बनती जा रही है।
लेकिन क्या इसके लिए केवल बच्चे जिम्मेदार हैं?
शायद नहीं। हमें उनके व्यवहार के पीछे की वजह समझने की जरूरत है।
ध्यान क्यों बिखर रहा है?
हमारे बच्चों की दुनिया बहुत तेज़ हो गई है। मोबाइल, गेम्स, शॉर्ट वीडियो, लगातार notifications और मनोरंजन की आसान उपलब्धता उनके सामने हर क्षण कुछ नया प्रस्तुत करती है। कई डिजिटल प्लेटफॉर्म इस तरह बनाए जाते हैं कि हमारा ध्यान अधिक समय तक बना रहे।
इसके साथ ही कम नींद, कम शारीरिक गतिविधि, पढ़ाई का दबाव, अत्यधिक व्यस्त दिनचर्या और परिवार के साथ कम बातचीत भी बच्चे के ध्यान और सीखने को प्रभावित कर सकती है। पर्याप्त और अच्छी नींद न मिलने पर बच्चे दिन में ध्यान लगाने और कक्षा में सक्रिय रहने में कठिनाई महसूस कर सकते हैं।
लेकिन एक और महत्वपूर्ण बात है—
हर बच्चा अलग होता है।
किसी बच्चे का ध्यान कम होना हमेशा मोबाइल की वजह से नहीं होता। कभी-कभी सीखने की कठिनाई, भावनात्मक परेशानी, चिंता या अन्य कारण भी हो सकते हैं। इसलिए बच्चे को तुरंत "लापरवाह" या "आलसी" कहना समाधान नहीं है।
तो क्या करें माता-पिता?
सबसे पहले—डाँटने से पहले सुनिए।
बच्चे से पूछिए, "तुम पढ़ाई पर ध्यान क्यों नहीं लगा पा रहे?"
शायद उसका उत्तर आपको उसकी समस्या तक पहुँचा दे।
कुछ छोटे लेकिन प्रभावी कदम:
* घर में पढ़ाई के समय मोबाइल और दूसरे distractions दूर रखें।
* सोने का समय नियमित रखें और रात में devices को bedroom से बाहर रखने की कोशिश करें।
* हर दिन outdoor play या physical activity के लिए समय निकालें।
* भोजन के समय पूरा परिवार बिना मोबाइल के साथ बैठे।
* बच्चे के साथ रोज़ कुछ समय केवल बातचीत और खेल के लिए रखें।
* पढ़ाई को छोटे-छोटे हिस्सों में बाँटें और बीच में छोटे breaks दें।
* बच्चे की केवल marks के लिए नहीं, उसके प्रयास के लिए भी प्रशंसा करें।
* माता-पिता स्वयं भी वही digital discipline अपनाएँ जिसकी अपेक्षा बच्चे से करते हैं।

UNICEF विशेष रूप से माता-पिता को सलाह देता है कि वे बच्चों के साथ screen use पर बातचीत करें, नियम मिलकर तय करें और स्वयं भी healthy digital habits का उदाहरण बनें।
और सबसे जरूरी—बच्चे को हर समय व्यस्त मत रखिए
बच्चे को कभी-कभी बोर होने का अवसर भी दीजिए।
हर खाली पल में मोबाइल, वीडियो या गेम देना जरूरी नहीं है। खाली समय में बच्चा सोचता है, कल्पना करता है, खेलता है, चीजें बनाता है और स्वयं को entertain करना सीखता है।
ध्यान एक मांसपेशी की तरह है—अभ्यास से मजबूत होता है।
रोज़ कुछ पन्ने किताब पढ़ना, drawing करना, puzzle हल करना, संगीत सुनना, पौधों की देखभाल करना या बिना किसी स्क्रीन के कुछ देर शांत बैठना—ये छोटी आदतें बच्चे को धीरे-धीरे sustained attention सीखने में मदद कर सकती हैं।

खाली पल में मोबाइल, वीडियो या गेम देना जरूरी नहीं है। खाली समय में बच्चा सोचता है, कल्पना करता है, खेलता है, चीजें बनाता है और स्वयं को entertain करना सीखता है।
ध्यान एक मांसपेशी की तरह है—अभ्यास से मजबूत होता है।
रोज़ कुछ पन्ने किताब पढ़ना, drawing करना, puzzle हल करना, संगीत सुनना, पौधों की देखभाल करना या बिना किसी स्क्रीन
माता-पिता के लिए एक जरूरी सवाल
हम अक्सर बच्चों से कहते हैं— "मोबाइल छोड़ो और मेरी बात सुनो।"
लेकिन क्या बच्चा हमें तब देखता है जब हम खुद मोबाइल में व्यस्त होते हैं?
बच्चे हमारी बातें सुनने से पहले हमारी आदतें देखते हैं।
इसलिए बच्चों का ध्यान सुधारने की शुरुआत शायद उनसे नहीं, हमसे होनी चाहिए।
एक सुंदर विचार
> *"बच्चे को हर समय व्यस्त रखना जरूरी नहीं; उसे अपने मन के साथ रहना सीखाना जरूरी है।"*
और जैसा महात्मा गांधी ने कहा था—
> *"आप वह बदलाव बनिए, जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं।"*
यदि हम चाहते हैं कि बच्चे किताब पढ़ें, तो उन्हें हमें पढ़ते हुए देखना चाहिए।
यदि हम चाहते हैं कि वे मोबाइल कम इस्तेमाल करें, तो उन्हें हमारा संतुलित व्यवहार दिखाई देना चाहिए।
यदि हम चाहते हैं कि वे धैर्य रखें, तो हमें भी उनके साथ धैर्य रखना होगा।
अंत में...
बच्चों का ध्यान केवल उनकी पढ़ाई का विषय नहीं है। यह उनके भविष्य, मानसिक संतुलन, सीखने और व्यक्तित्व से जुड़ा हुआ है।
हमें बच्चों से यह नहीं पूछना चाहिए— "तुम ध्यान क्यों नहीं लगाते?"
कभी-कभी हमें उनसे यह पूछना चाहिए—"ऐसा क्या है, जो तुम्हारा ध्यान बार-बार भटका रहा है?"
शायद इस एक सवाल से हम किसी बच्चे को डाँटने के बजाय समझने की शुरुआत कर सकें।

बच्चों को केवल ध्यान लगाने की शिक्षा नहीं, ध्यान पाने का अधिकार भी चाहिए।

एकता शुक्ला
(Admin Executive)

“समर्पण, निष्ठा और दृढ़ संकल्प

एक विद्यालय की असली शक्ति
किसी भी विद्यालय की पहचान केवल उसकी बड़ी इमारत, अच्छे परिणाम या आधुनिक सुविधाओं से नहीं होती। एक विद्यालय की असली पहचान उन लोगों से होती है, जो हर दिन उसे बेहतर बनाने के लिए अपना योगदान देते हैं।
चाहे वह प्रधानाचार्य हों या शिक्षक, कार्यालय का कर्मचारी हो या सहायक स्टाफ, वरिष्ठ हो या कनिष्ठ—हर व्यक्ति विद्यालय की एक महत्वपूर्ण कड़ी है।
और इस पूरी यात्रा को मजबूत बनाते हैं तीन छोटे, लेकिन बहुत शक्तिशाली शब्द—
समर्पण, निष्ठा और दृढ़ संकल्प।
समर्पण — अपने काम को अपना मानना
समर्पण का अर्थ केवल अधिक समय तक काम करना नहीं है। इसका अर्थ है—अपने काम को जिम्मेदारी और पूरे मन से करना।
एक शिक्षक जब हर बच्चे को समझने की कोशिश करता है, एक कर्मचारी जब अपने काम को समय पर और ईमानदारी से पूरा करता है, एक सहायक कर्मचारी जब विद्यालय की स्वच्छता और व्यवस्था का ध्यान रखता है—ये सभी समर्पण के उदाहरण हैं।
कभी-कभी हमारा छोटा-सा काम भी किसी और के लिए बहुत बड़ा बन जाता है।
एक साफ कक्षा, समय पर तैयार की गई व्यवस्था, मुस्कुराकर किया गया अभिवादन या किसी बच्चे की छोटी-सी मदद—ये छोटी बातें विद्यालय के वातावरण को बड़ा बनाती हैं।
निष्ठा — जब कोई देख न रहा हो, तब भी सही काम करना
निष्ठा का सबसे सुंदर रूप तब दिखाई देता है, जब हमें देखने वाला कोई नहीं होता।
हम अपना काम इसलिए करें क्योंकि यह हमारा कर्तव्य है, न कि इसलिए कि कोई हमारी प्रशंसा करेगा।
एक अच्छा विद्यालय उन लोगों से बनता है जो कहते हैं—
“यह मेरा काम नहीं है” की जगह
“विद्यालय का काम है, मैं कर देता हूँ।”
यही भावना एक टीम को परिवार बनाती है।
दृढ़ संकल्प — मुश्किल आए, फिर भी आगे बढ़ना
विद्यालय में हर दिन एक जैसा नहीं होता। कभी परिणाम हमारी अपेक्षा के अनुसार नहीं आते, कभी कोई बच्चा हमारी उम्मीद के अनुसार प्रगति नहीं करता, कभी काम का दबाव बढ़ जाता है।
लेकिन ऐसे समय में हार मान लेना आसान है।
दृढ़ संकल्प हमें कहता है—एक बार और कोशिश करो।
एक शिक्षक बार-बार समझाता है।
एक बच्चा बार-बार प्रयास करता है।
एक कर्मचारी बार-बार व्यवस्था सुधारता है।
यही छोटे-छोटे प्रयास एक दिन बड़ी सफलता बन जाते हैं।
विद्यालय किसी एक व्यक्ति का नहीं होता
एक विद्यालय को आगे ले जाने की जिम्मेदारी केवल Principal की नहीं होती। केवल Teachers की भी नहीं।
विद्यालय हम सबका है।
जिस बच्चे का व्यवहार अच्छा है, वह विद्यालय का नाम ऊँचा करता है।
जो शिक्षक पूरे मन से पढ़ाता है, वह विद्यालय का भविष्य बनाता है।
जो कर्मचारी अपने काम में ईमानदारी रखता है, वह विद्यालय को मजबूत बनाता है।
और जो सहायक कर्मचारी चुपचाप अपनी जिम्मेदारी निभाता है, वह भी उतना ही महत्वपूर्ण है—भले ही उसका नाम मंच से कभी न पुकारा जाए।
हर योगदान की अपनी कीमत होती है।

अंत में बस इतना…
हम सभी अलग-अलग भूमिकाओं में हैं, लेकिन हमारा उद्देश्य एक है—
अपने विद्यालय को ऐसा स्थान बनाना, जहाँ बच्चे केवल पढ़ें नहीं, बल्कि अच्छे इंसान बनना सीखें।
इसके लिए बड़े-बड़े शब्दों की नहीं, रोज़ की छोटी-छोटी अच्छी कोशिशों की जरूरत है।
काम छोटा या बड़ा नहीं होता।
निष्ठा छोटी या बड़ी नहीं होती।
महत्व इस बात का है कि हम अपना काम कितने मन से करते हैं।
आइए, हम अपने विद्यालय के लिए तीन संकल्प लें—
समर्पण से काम करेंगे।
निष्ठा से जिम्मेदारी निभाएँगे।
दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ेंगे।
क्योंकि—
**"एक व्यक्ति विद्यालय चला सकता है,
लेकिन एकजुट होकर काम करने वाली पूरी टीम ही विद्यालय को ऊँचाइयों तक ले जाती है।"**
यही एक अच्छे विद्यालय की असली शक्ति है।

- परवेज़ अहमद ख़ान
(Admin Executive)

Robotics: A New Era, but Use It Wisely

Robotics is the science of designing, building, and controlling robots. Robots use programs, sensors, and artificial intelligence to perform a variety of tasks.
They can work in dangerous places, explore space and the oceans, assist doctors, operate in factories, help farmers, and even clean homes.
"A robot is a machine, but its possibilities come from human imagination."
Robotics helps students learn science, mathematics, coding, electronics, and design.
While building robots, students learn how to solve problems, test ideas, correct mistakes, and work as a team.
Today, robots are used in hospitals, farms, factories, schools, and homes. They can also support people with disabilities and make their daily lives easier.
Robotics teaches us that failure is an important part of learning. A robot may not work properly at first, but every mistake gives us an opportunity to improve.
Students can begin with simple projects such as a line-following robot, an obstacle-avoiding car, or a smart dustbin.
"Start small, ask questions, and never stop trying."
Robotics can create exciting career opportunities in engineering, programming, medicine, space research, and many other fields. However, robots must be used responsibly to help people, protect privacy, and care for nature.
Robots may be intelligent, but they do not possess human kindness, emotions, or moral understanding. These qualities come from us.
Therefore, we should learn robotics with curiosity, creativity, and responsibility. We should ask not only, "What can robots do?" but also, "What good can we do with robots?"
Robotics is not just the future; it is a new way of learning, creating, and solving problems.

- Vice Principal

किताबों से बढ़कर कोई दोस्त नहीं

किताबों से बढ़कर कोई दोस्त नहीं"किताबें ऐसी दोस्त हैं, जो हमें कभी अकेला नहीं छोड़तीं।"आज की दुनिया में हमारे पास जानकारी के अनगिनत साधन हैं। मोबाइल की एक स्क्रीन पर पूरा संसार मौजूद है। फिर भी, एक अच्छी किताब का महत्व आज भी उतना ही है—बल्कि शायद पहले से अधिक।क्योंकि जानकारी हमें इंटरनेट से मिल सकती है, लेकिन ज्ञान, दृष्टि और विवेक किताबों से विकसित होते हैं।किताबें हमारी ऐसी मित्र हैं जो बिना किसी स्वार्थ के हमारा साथ देती हैं। जब हम प्रसन्न होते हैं, वे हमारी खुशी बढ़ाती हैं; जब हम परेशान होते हैं, वे हमें एक नई दुनिया में ले जाती हैं; और जब हम उलझन में होते हैं, वे हमें सोचने का एक नया रास्ता दिखाती हैं।> *"किताबें ज्ञान का वह दीपक हैं, जिसकी रोशनी जीवन भर साथ चलती है।"*एक अच्छी किताब केवल कहानी नहीं सुनाती। वह हमें लोगों को समझना, परिस्थितियों को देखना और जीवन पर विचार करना सिखाती है। इतिहास हमें अतीत से परिचित कराता है, विज्ञान हमारी जिज्ञासा बढ़ाता है, जीवनियाँ संघर्ष से सीख देती हैं और साहित्य हमारी संवेदनाओं को गहरा करता है।इसीलिए पढ़ना केवल परीक्षा में अच्छे अंक पाने का माध्यम नहीं होना चाहिए।पढ़ना अपने व्यक्तित्व को समृद्ध करने की प्रक्रिया है।

*"जो किताबें पढ़ता है, वह केवल शब्द नहीं पढ़ता; वह अनुभवों और विचारों की दुनिया पढ़ता है।"*एक विद्यार्थी जो नियमित रूप से पढ़ता है, उसकी भाषा बेहतर होती है, शब्द-भंडार बढ़ता है, कल्पनाशक्ति विकसित होती है और सबसे महत्वपूर्ण—उसमें स्वतंत्र रूप से सोचने की क्षमता पैदा होती है।आज जब हम हर प्रश्न का उत्तर तुरंत खोज लेते हैं, किताबें हमें एक जरूरी आदत सिखाती हैं—रुकना, पढ़ना और सोचना।> *"किताब का हर पन्ना एक नई खिड़की खोलता है; बस उसे खोलने की इच्छा होनी चाहिए।"*इसलिए बच्चों के हाथों में केवल पाठ्य-पुस्तकें ही नहीं, बल्कि ऐसी किताबें भी होनी चाहिए जो उनके मन में प्रश्न पैदा करें, उनकी कल्पना को उड़ान दें और उन्हें बेहतर इंसान बनने की प्रेरणा दें।

हर विद्यार्थी को ये पुस्तकें अवश्य पढ़नी चाहिए

📖 पंचतंत्र — बुद्धिमत्ता, व्यवहार और जीवन-मूल्यों की रोचक कहानियाँ।

📖 Wings of Fire — डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम — सपनों, संघर्ष और सफलता की प्रेरक यात्रा।

📖 The Diary of a Young Girl — Anne Frank — साहस, आशा और मानवीय संवेदना की गहरी सीख।

📖 The Little Prince — Antoine de Saint-Exupéry — सरल कहानी में जीवन और रिश्तों की गहरी समझ ।

📖 The Alchemist — Paulo Coelho — अपने सपनों पर विश्वास करने की प्रेरणा।

📖 Malgudi Days — R. K. Narayan — भारतीय जीवन और मानवीय रिश्तों की सहज कहानियाँ।📖 Gulliver's Travels — Jonathan Swift — कल्पना के साथ दुनिया और समाज को देखने की एक अलग दृष्टि । *"

पुस्तकें हमें वह दिखाती हैं, जो हमारी आँखें नहीं देख पातीं।"*किताबों की सबसे बड़ी खूबी यही है कि वे हमें केवल सफल विद्यार्थी नहीं, बल्कि समझदार और संवेदनशील इंसान बनने में मदद करती हैं।हर बच्चे के कमरे में एक छोटी-सी पुस्तक-रैक होनी चाहिए—ऐसी किताबों के साथ जिन्हें वह अपनी इच्छा से चुन सके।क्योंकि हर किताब एक बंद दरवाज़े की तरह है।उसे खोलिए—अंदर एक नई दुनिया आपका इंतज़ार कर रही है।> *"आज का पाठक, कल का विचारक और आने वाले कल का नेतृत्वकर्ता है।"*तो आइए, पढ़ने को केवल एक आदत नहीं, जीवन का हिस्सा बनाएं।हर दिन कुछ पन्ने पढ़ें।कुछ नया जानें।कुछ नया सोचें।और कभी-कभी किसी किताब को अपना सबसे अच्छा दोस्त बनने दें।क्योंकि—"दोस्त हमारा साथ देते हैं,लेकिन किताबें हमें अपने भीतर की दुनिया से मिलाती हैं।"इसलिए मुझे लगता है किताबों से बढ़कर कोई दोस्त नहीं किताबों से बढ़कर कोई दोस्त नहीं।

मेनका नानवानी
(Admin Executive)

हिंदी : हमारी पहचान, हमारी आवाज़

भाषा केवल शब्दों का माध्यम नहीं होती; वह हमारी संस्कृति, संवेदना और पहचान की अभिव्यक्ति होती है। हिंदी हमारे लिए केवल संवाद की भाषा नहीं, बल्कि हमारी मिट्टी की खुशबू, हमारी परंपराओं की धरोहर और हमारे भावों की सहज अभिव्यक्ति है।14 सितंबर को मनाया जाने वाला हिंदी दिवस हमें अपनी भाषा के प्रति सम्मान और गौरव का स्मरण कराता है। यह दिन केवल हिंदी को याद करने का अवसर नहीं, बल्कि यह सोचने का भी अवसर है कि हम अपनी भाषा को अपने दैनिक जीवन में कितना स्थान देते हैं।आज का युग वैश्विक संवाद और तकनीक का युग है। अंग्रेज़ी सहित अनेक भाषाओं का ज्ञान हमारे लिए आवश्यक है, लेकिन दूसरी भाषाओं को अपनाने का अर्थ अपनी भाषा से दूर होना नहीं है। बहुभाषी होना हमारी शक्ति है, पर अपनी मातृभाषा और अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहना हमारी पहचान है।हिंदी की सबसे बड़ी शक्ति उसकी सहजता और व्यापकता है। यह साहित्य की भाषा है, कविता की भाषा है, लोकजीवन की भाषा है और करोड़ों लोगों के मन की आवाज़ है।आइए, हिंदी दिवस पर हम केवल हिंदी बोलने का संकल्प न लें, बल्कि हिंदी को सम्मान, हिंदी साहित्य को प्रोत्साहन और हिंदी के सुंदर एवं शुद्ध प्रयोग को अपने जीवन का हिस्सा बनाने का संकल्प लें।क्योंकि—“भाषा वही जीवित रहती है, जिसे अगली पीढ़ी प्रेम से अपनाती है।”हिंदी हमारी विरासत ही नहीं,हमारे भविष्य की भी एक सशक्त आवाज़ है।

सायका आलम ज़ैदी
(Admin Executive)

मोबाइल के मारे, हम बच्चे बेचारे

“मोबाइल हाथ में आया, पढ़ाई ने कहा—मैं चली!”

मेरा नाम क्या है, यह मायने नहीं रखता। मायने यह रखता है कि जो मैंने लिखा है, आप इसे पूरा पढ़ें। वैसे अगर पढ़ते-पढ़ते आपका हाथ मोबाइल की ओर बढ़ जाए, तो कृपया पहले यह लेख पूरा कर लें। मोबाइल कहीं भाग नहीं रहा—वह तो हमारे साथ ही चिपका हुआ है!

पहले मैं एक सामान्य बच्चा था। स्कूल जाता था, होमवर्क करता था, दोस्तों के साथ खेलता था और कभी-कभी अपनी किताबें भी खोल लेता था। फिर मैंने दोस्तों की देखा-देखी मोबाइल की ज़िद कर ली।

मम्मी-पापा ने मुझे मोबाइल दिला दिया।

उन्होंने कहा, “बेटा, इससे सिर्फ पढ़ाई करना और कुछ नया सीखना।”

मैंने भी मासूम चेहरा बनाकर कहा, “जी पापा, सिर्फ पढ़ाई के लिए।”

उस दिन से मेरी जिंदगी बदल गई। अब मैं मोबाइल को पढ़ाई का साधन नहीं, अपना सबसे अच्छा दोस्त मानता हूँ। वह मुझे कभी डाँटता नहीं, होमवर्क के बारे में पूछता नहीं और हर पाँच मिनट में मनोरंजन की नई चीज दिखाता है।

पहले मैं किताब खोलकर पढ़ता था। अब मोबाइल खोलकर किताब की फोटो खींचता हूँ और फिर मोबाइल में ही खो जाता हूँ। माँ पूछती हैं, “बेटा, पढ़ाई हो गई?”

मैं कहता हूँ, “हाँ माँ, बस पढ़ाई से संबंधित वीडियो देख रहा हूँ।”

असल में मैं वीडियो देख रहा होता हूँ—पहले एक, फिर दूसरा, फिर तीसरा। हर वीडियो के बाद मोबाइल कहता है, “अब यह भी देख लो।” मोबाइल इतना समझदार है कि उसे मेरी पढ़ाई से ज्यादा मेरी कमजोरी का पता है।

कभी-कभी मैं पढ़ाई का वीडियो खोलता हूँ, लेकिन पाँच मिनट बाद मुझे पता चलता है कि मैं किसी बिल्ली को पियानो बजाते हुए देख रहा हूँ। फिर मोबाइल मुझे एक डांस वीडियो दिखाता है, उसके बाद खाना बनाने की रेसिपी और अंत में ऐसा वीडियो, जिसका मेरी पढ़ाई से कोई संबंध नहीं होता—सिवाय इसके कि वह मुझे पढ़ाई से दूर रखता है।

माँ-पापा ने मुझे मोबाइल की पूरी आजादी दे रखी है। कहते हैं, “हम अपने बच्चे पर भरोसा करते हैं।”

मैं भी उस भरोसे का पूरा सम्मान करता हूँ। मोबाइल का पासवर्ड बदल देता हूँ, स्क्रीन छिपा देता हूँ और पूछने पर कहता हूँ, “बैटरी कम है।”

हालाँकि बैटरी 87 प्रतिशत होती है, लेकिन उस समय सच बोलना मेरी बैटरी से भी ज्यादा कम हो जाता है।
पहले पापा मुझे पार्क ले जाते थे। अब मैं उन्हें मोबाइल पर पार्क की तस्वीर दिखा देता हूँ। पहले माँ मेरे साथ बैठकर बातें करती थीं। अब मैं उन्हें मैसेज कर देता हूँ—"माँ, पानी भेज दो।"
घर में सब लोग पास-पास रहते हैं, लेकिन बातचीत मोबाइल के जरिए होती है। पापा ड्राइंग रूम से मैसेज करते हैं, "खाना लग गया है।"
मैं कमरे से जवाब देता हूँ, "अभी आया।"

यह "अभी" कभी-कभी इतना लंबा होता है कि खाना ठंडा और पापा का धैर्य गरम हो जाता है।
कभी माँ मेरे कमरे के बाहर खड़ी होकर कहती हैं, "बेटा, दरवाज़ा खोलो।"
मैं अंदर से मैसेज करता हूँ, "कौन?"
माँ जवाब देती हैं, "तुम्हारी माँ।"
मैं लिखता हूँ, "पहचान का प्रमाण भेजिए।"
मोबाइल ने मेरी पढ़ाई को भी आधुनिक बना दिया है। अब मैं किताबों में उत्तर नहीं ढूँढ़ता। सीधे इंटरनेट से उत्तर खोजता हूँ। कभी-कभी उत्तर इतना कठिन होता है कि मुझे खुद समझ नहीं आता कि मैंने क्या लिखा है। लेकिन कॉपी देखकर लगता है कि मैं बहुत विद्वान हूँ।
एक बार मैंने इंटरनेट से उत्तर कॉपी किया। टीचर ने पूछा, "इसका अर्थ समझाओ।"
मैंने कहा, "मैडम, यह उत्तर मैंने लिखा है, लेकिन इसका अर्थ इंटरनेट से पूछना पड़ेगा।"
स्कूल में टीचर्स कहते हैं, "बच्चों, ध्यान से पढ़ो।"
मैं मन ही मन सोचता हूँ और कहता हूँ, "जी सर।"
लेकिन आदतन बैग में छिपाए हुए मोबाइल पर थोड़ी-थोड़ी देर बाद देखता रहता हूँ कि मेरे लगाए हुए स्टेटस पर किसने रिएक्ट किया।
कभी-कभी मैं इतना ध्यान से मोबाइल देखता हूँ कि टीचर की आवाज़ सुनाई नहीं देती। फिर अचानक टीचर पूछते हैं, "तुम्हें समझ आया?"
मैं तुरंत कहता हूँ, "जी सर, बिल्कुल।"
फिर टीचर पूछते हैं, "मैंने क्या समझाया?"
तब मैं कहता हूँ, "सर, आपने बहुत अच्छा समझाया।"
हमारे टीचर्स हमें खेल, किताबें, बातचीत और रचनात्मक काम के लिए प्रेरित करते हैं। वे कहते हैं कि शिक्षा केवल स्क्रीन देखने से नहीं, जीवन को समझने से मिलती है। लेकिन हम बच्चों ने शिक्षा का नया अर्थ निकाल लिया है—
"जहाँ वाई-फाई हो, वहीं ज्ञान है।"
हालाँकि कभी-कभी वाई-फाई चला जाए तो हमें लगता है कि ज्ञान भी छुट्टी पर चला गया।
मोबाइल के कारण मेरी आँखों ने चश्मे से दोस्ती कर ली है। मेरी गर्दन हमेशा नीचे झुकी रहती है, जैसे मैं हर समय जमीन से माफी माँग रहा हूँ। मेरी उँगलियाँ इतनी तेज चलती हैं कि अगर इन्हें कॉपी पर चलाऊँ तो शायद होमवर्क समय पर पूरा हो जाए। लेकिन कॉपी पर लिखने के लिए मोबाइल से ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है। इसलिए हम बच्चे मेहनत से बचने के लिए मोबाइल को दोष नहीं देते, बल्कि मोबाइल को अपना अधिकार मानते हैं।
माँ-पापा भी कभी-कभी कहते हैं, "बेटा, मोबाइल कम चलाओ।"
मैं गुस्से में कहता हूँ, "कितना कम?"
वे कहते हैं, "पढ़ाई पर ध्यान दो।"
मैं पूछता हूँ, "मोबाइल पर पढ़ाई करूँ या किताब से?"
वे कहते हैं, "किताब से।"
मैं कहता हूँ, "लेकिन किताब में नोटिफिकेशन नहीं आते।"
इस सवाल के बाद घर में कुछ देर शांति रहती है। फिर पापा अपना मोबाइल निकालकर समाचार देखने लगते हैं और माँ ऑनलाइन खरीदारी। मैं समझ जाता हूँ कि परिवार में मोबाइल-विरोधी आंदोलन अभी शुरू नहीं हुआ है।
माता-पिता हमें मोबाइल देकर सोचते हैं कि बच्चा घर में सुरक्षित है। लेकिन मोबाइल के अंदर एक पूरा संसार छिपा है—खेल, वीडियो, विज्ञापन, अनजान लोग और ऐसी आदतें, जिनसे बाहर निकलना आसान नहीं होता।
मोबाइल में खेलते-खेलते मैं इतना व्यस्त हो जाता हूँ कि माँ के बुलाने पर भी नहीं सुनता। लेकिन जैसे ही मोबाइल की घंटी बजती है, मैं घर के दूसरे कमरे से भी दौड़कर पहुँच जाता हूँ।
माँ कहती हैं, "बेटा, मेरी आवाज़ नहीं सुनाई देती?"
मैं कहता हूँ, "माँ, आपकी आवाज़ तो आती है, लेकिन मोबाइल की आवाज़ थोड़ी ज्यादा महत्वपूर्ण लगती है।"
आज मैं मोबाइल पर घंटों बिताता हूँ। कल शायद मेरी पढ़ाई कमजोर होगी, नींद कम होगी, स्वास्थ्य बिगड़ेगा और बातचीत की आदत खत्म हो जाएगी। तब माँ-पापा कहेंगे, "हमने तो तुम्हें सुविधा दी थी।"

मैं कहूँगा, "हाँ, आपने सुविधा दी थी। मैंने उसे जीवन बना लिया।"
सबसे बड़ा नुकसान यह है कि मोबाइल की आजादी धीरे-धीरे घर की शांति छीन लेती है। बच्चा चिड़चिड़ा होता है, माता-पिता परेशान होते हैं और फिर दोनों एक-दूसरे को दोष देते हैं।
बच्चा कहता है, "आप मुझे समझते नहीं।"
माता-पिता कहते हैं, "तुम हमारी सुनते नहीं।"
और मोबाइल चुपचाप बीच में बैठकर कहता है, "आप दोनों लड़िए, मैं तब तक वीडियो चलाता हूँ।"
इस तरह घर में तीन सदस्य होते हैं—माँ, पापा और मोबाइल। धीरे-धीरे मोबाइल सबसे ज्यादा सुना जाने वाला सदस्य बन जाता है।
कभी-कभी तो लगता है कि घर में मोबाइल की अपनी कुर्सी होनी चाहिए। खाने की मेज पर सबसे पहले मोबाइल बैठता है, सोने से पहले मोबाइल को शुभरात्रि कहा जाता है और सुबह उठते ही सबसे पहले उसी का चेहरा देखा जाता है।
लेकिन मोबाइल पूरी तरह बुरा भी नहीं है। उससे पढ़ाई हो सकती है, नई जानकारी मिल सकती है, रचनात्मक काम सीखा जा सकता है और दूर बैठे लोगों से बात की जा सकती है। समस्या मोबाइल नहीं, उसका बिना सीमा के इस्तेमाल है।
मोबाइल चाकू की तरह है। उससे फल भी काटे जा सकते हैं और उँगली भी। फर्क इस बात से पड़ता है कि उसे इस्तेमाल कौन और कैसे कर रहा है।
स्कूल हमें अनुशासन सिखाता है। इसलिए स्कूल में मोबाइल के उपयोग को सीमित करना बच्चों के खिलाफ नहीं, बच्चों के पक्ष में है। स्कूल में मोबाइल न लाने का नियम हमें यह याद दिलाता है कि हर समय ऑनलाइन रहना जरूरी नहीं है। कभी-कभी ऑफलाइन रहना भी बहुत जरूरी है—ताकि हम अपने दोस्तों को सामने से देख सकें, टीचर की बात ध्यान से सुन सकें और यह पता लगा सकें कि हमारी गर्दन अभी भी सीधी हो सकती है।
अब मैंने एक छोटा-सा नियम बनाया है। पढ़ाई के समय मोबाइल दूर रहेगा। रात में मोबाइल मेरे कमरे में नहीं आएगा। रोज कुछ समय किताब, खेल और परिवार के लिए होगा।
माँ-पापा ने भी तय किया है कि वे मुझे मोबाइल देने से पहले यह देखेंगे कि मुझे सच में उसकी जरूरत है या केवल मन कर रहा है। उन्होंने यह भी समझ लिया है कि बच्चे को मोबाइल देकर चुप कराना आसान है, लेकिन उसे मोबाइल से दूर करना बहुत कठिन।
उन्होंने अपने लिए भी कुछ नियम बनाए हैं। अब खाना खाते समय मोबाइल मेज पर नहीं रहेगा। बातचीत के समय मोबाइल जेब में रहेगा। और अगर कोई बहुत जरूरी मैसेज नहीं है, तो वह पाँच मिनट बाद भी पढ़ा जा सकता है।
मैं अभी भी मोबाइल चलाता हूँ, लेकिन अब मोबाइल मुझे नहीं चलाता।
क्योंकि मैं समझ गया हूँ कि मोबाइल एक अच्छा सेवक हो सकता है, लेकिन बहुत खराब मालिक।
और मेरी आत्मकथा का सबसे महत्वपूर्ण वाक्य यही है—
"मोबाइल के मारे हम बच्चे बेचारे नहीं,
अगर समझदारी से चलाएँ तो मोबाइल हमारे सहारे सही।"
लेकिन अगर माँ-पापा ने हमें बिना सीमा की आजादी दी और हमने भी बिना सोचे उसका इस्तेमाल किया, तो कल हम मोबाइल के मालिक नहीं, उसके स्थायी कर्मचारी बन जाएँगे।
हमारी ड्यूटी होगी—सुबह उठते ही स्क्रीन देखना, दिनभर नोटिफिकेशन जाँचना और रात को मोबाइल को तकिए के पास सुलाना।
और तब शायद हमारी अगली पीढ़ी हमें देखकर पूछेगी—
"पापा, आपके समय में भी लोग मोबाइल के बिना जीते थे?"
तब हम शायद कहेंगे—
"हाँ बेटा, जीते थे।
लेकिन अब याद नहीं कि कैसे।"

- अज्ञात

Books के Beyond:

पढ़ाई के साथ Activities भी हैं जरूरी

हर बच्चा अलग रुचि और सपने लेकर स्कूल आता है। कोई पढ़ाई में अच्छा होता है, कोई कला, संगीत, खेल, लेखन या technology में।

इसलिए शिक्षा को केवल marks और report cards तक सीमित नहीं करना चाहिए। पढ़ाई के साथ co-curricular activities भी बच्चों के व्यक्तित्व को निखारती हैं।

Activities क्यों जरूरी हैं?

किताबें ज्ञान देती हैं, जबकि activities उस ज्ञान को जीवन में उपयोग करना सिखाती हैं।

कला creativity बढ़ाती है, संगीत concentration और patience सिखाता है, साहित्य भाषा और विचारों को मजबूत बनाता है, जबकि खेल discipline, teamwork और leadership विकसित करते हैं।

Activities में भाग लेने से बच्चे—

* आत्मविश्वास से अपनी बात रखना सीखते हैं।
* हार और जीत को स्वीकार करते हैं।
* teamwork और time management समझते हैं।
* अपनी भावनाओं को व्यक्त करना सीखते हैं।
* challenges का सामना करना सीखते हैं।

अलग-अलग Activities, अलग-अलग सीख

कला और संगीत

Drawing, painting, craft, photography, singing और instrumental music बच्चों की imagination और creativity बढ़ाते हैं। इन क्षेत्रों में आगे चलकर Designer, Animator, Photographer, Singer, Music Teacher या Composer जैसे career options मिल सकते हैं।

साहित्य और लेखन

Reading, writing, poetry, storytelling, debate और public speaking बच्चों की भाषा और सोच को मजबूत बनाते हैं। इससे Author, Journalist, Content Writer, Teacher, Lawyer और Public Speaker जैसे क्षेत्रों में अवसर मिल सकते हैं।

खेल

Cricket, football, badminton, athletics, swimming, yoga और chess बच्चों को healthy और active बनाते हैं। खेलों से discipline, teamwork, leadership और sportsmanship की भावना विकसित होती है।

Drama और Dance

Drama, theatre और dance बच्चों की झिझक दूर करते हैं और expression, body language तथा confidence बढ़ाते हैं। ये activities communication और personality development में भी सहायक हैं।

Science और Technology

Robotics, coding, science exhibitions, quiz, gardening और community service जैसी activities बच्चों में curiosity, problem-solving और practical learning विकसित करती हैं।

हर बच्चे की अपनी पहचान

हर बच्चा हर activity में अच्छा हो, यह जरूरी नहीं है। किसी को drawing पसंद हो सकती है, किसी को football, poetry या coding।

बच्चों की तुलना करने के बजाय उनकी रुचि पहचानना चाहिए। Passion के साथ practice और discipline जुड़ जाए, तो talent skill में और skill career में बदल सकती है।

Parents और School की भूमिका

Parents को केवल marks पर ध्यान नहीं देना चाहिए, बल्कि यह भी समझना चाहिए कि बच्चा किस activity में खुशी महसूस करता है।

School को बच्चों को अलग-अलग activities में भाग लेने के अवसर देने चाहिए और केवल winners ही नहीं, participants को भी प्रोत्साहित करना चाहिए।

Balance is the Key
Activities का अर्थ पढ़ाई को नजरअंदाज करना नहीं है। पढ़ाई, खेल, hobbies, आराम और नींद के बीच संतुलन जरूरी है। बच्चों को समझना चाहिए कि पढ़ाई और activities एक-दूसरे की विरोधी नहीं, बल्कि सहयोगी हैं।
अंत में…
बच्चे केवल marks लाने वाली मशीन नहीं हैं। वे सपनों, भावनाओं और संभावनाओं से भरे हुए व्यक्तित्व हैं।
किताबें ज्ञान देती हैं, लेकिन activities जीवन जीने की कला सिखाती हैं।
इसलिए बच्चों से केवल यह न पूछें— "आज कितने marks आए?"
कभी यह भी पूछिए— "आज तुमने क्या नया सीखा?" "किस activity में तुम्हें सबसे ज्यादा खुशी मिली?"
क्योंकि शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा पास करना नहीं, बल्कि बच्चे को confident, creative, healthy और responsible इंसान बनाना है।

Study Smart, Play Hard, Create Freely and Dream Big.

- MEENAKSHI DUBEY
Coordinator

Save Global Resources

Our Future Depends on It

We often hear the words "Save Water, Save Trees, Save Energy. "But have we ever stopped to ask ourselves—why? Because the resources we use every day are not endless. Water, forests, soil, food, minerals and energy are the gifts that make life possible. Yet we often use them as if there will always be more. The warning signs are already around us. In 2026, the world has witnessed extreme heat, droughts, floods and wildfires in many regions. August 2026 was recorded as one of the hottest months ever measured globally. Water is another growing concern. The United Nations reports that 2.1 billion people still do not have safely managed drinking water, while water demand continues to rise. Our forests are also under pressure. A 2026 UN report found that global forest area fell by more than 40 million hectares between 2015 and 2025.And food cannot be taken for granted either. Extreme weather and other disruptions are already affecting food supplies and prices around the world. These are not just numbers in reports. They are warnings about the world our children will inherit. The good news is that saving the planet does not always require extraordinary actions. Turn off a tap that is running unnecessarily. Switch off lights and fans when you leave a room. Avoid wasting food. Carry a reusable bottle. Use paper wisely. Plant and protect trees. Reuse before you throw something away. Most importantly, use only what you need. A student may think, "What difference can one person make? "But every large change begins with many people making small changes. A school can become a powerful place for this change. If every student saves a little water, every teacher avoids unnecessary waste, every staff member uses resources carefully and every family carries these habits home, the impact can be enormous. We do not own the Earth. We have borrowed it from the generations that will come after us. So the question is not only, "What are we getting from the Earth? "The more important question is: "What are we leaving behind for the next generation? "Saving global resources is not only an environmental responsibility. It is a responsibility towards life itself. Let us use less, waste less, care more—and leave behind a planet that our children will be proud to call home.

- Pooja Batra
(Admin Executive)

Admit cards are being handed over to eager students, marking the final steps before their exams begin.

Students lined up to receive their admit cards from school officials, a moment of anticipation and responsibility before board examinations. This organized distribution ensures everyone is equipped and informed, supporting students' academic journey as they prepare to take the next big step.

A day to celebrate achievements, learn from outcomes, and look forward to new possibilities.

Result Declaration Day brought moments of excitement, reflection, and anticipation for students. Whether relishing success or planning for future improvements, every grade became a stepping stone towards learning and growth. Teachers and mentors joined in, congratulating students for their hard work and encouraging everyone to embrace both triumphs and lessons with a positive spirit.

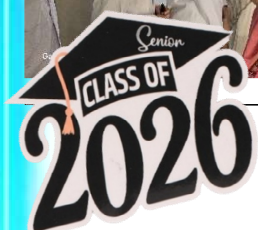

Prom night AFTER ACHIEVING SUCCESS sparkles with joy as friends make memories that last a lifetime

This cherished tradition brought everyone together to celebrate youth, friendship, and the end of another school year. Each smile and dance move captured in photos reflects the spirit of the evening and the promise of lifelong memories

Dressed in their finest, students enjoyed an unforgettable night of music, laughter, and dancing at the prom.

> **"Results are a stepping stone, not a destination. Keep climbing!"**

The event celebrated hard work and perseverance, inspiring others in the school community to strive for excellence. Words of encouragement and warm congratulations created a memorable atmosphere of appreciation

Students Enthusiastically Displayed Athletic Skills and School Spirit During an Action-Packed Annual Sports Day.

Sports Day buzzed with energy as students from every grade competed in track and field events, team games, and fun challenges. Applause filled the arena as participants raced, jumped, and played, reminding everyone of the power of perseverance and fair play.

Cultural Day Witnessed Record Student Involvement and Sparked Creativity Through Diverse Performances

A colorful Cultural Day stage became a canvas for student talent, with dance, music, art, and drama performances representing a wide array of traditions.

Team Events Fostered Strong Bonds as Students Learned the True Meaning of Cooperation and Mutual Support

Participation in group events, from relays to dramatic presentations, gave students ample opportunity to work together, strategize, and share success. The spirit of cooperation was evident, building trust and friendships that will last beyond the school year. Such teamwork became a lesson in empathy, discipline, and shared achievement.

Their resilience, teamwork, and vibrant sportsmanship made the day unforgettable.

School Community United to Celebrate Milestones, Build Memories, and Encourage Holistic Development for All The broad participation in Sports and Cultural Days strengthened the bonds within the school, involving teachers, parents, and students in a joyous celebration. Collective achievements, new friendships, and laughter made these events true highlights of the year. Together, the school community renewed its dedication to nurturing well-rounded individuals in a positive atmosphere.

Leadership and Confidence Flourished as Students Took Initiative in Organizing and Leading School Activities

Celebrating unity and pride—students bring the spirit of India alive on National Festival Day.

On National Festival Day, students gathered with enthusiasm to honor the country's rich heritage. Patriotic songs, vibrant dances, and cultural displays highlighted the values of freedom, unity, and respect for tradition. By participating in flag hoisting and creative performances, students remembered the sacrifices of past heroes but also pledged to contribute to the nation's progress. The event fostered a deep sense of belonging and pride, leaving everyone inspired to celebrate diversity and strive for a brighter future together.

"Unity in diversity is our strength; let every festival remind us of our shared pride and purpose.

Learning beyond the classroom—students explore, discover, and grow together on a school trip

The school trip was an adventure filled with curiosity and friendship. Students visited new places, explored nature, and experienced local culture, making every moment memorable. From educational tours to outdoor activities, every outing encouraged teamwork, broadened horizons, and made classroom lessons come alive. Such trips build confidence, foster lifelong friendships, and ignite a passion for learning in the real world, ensuring that every student returns enriched and inspired for future journeys.

Exploring new worlds through hands-on learning and joyful discovery

Learning came alive as students participated in various activity-based sessions that stimulated their curiosity and enhanced understanding. From interactive experiments to creative projects, these activities fostered critical thinking, cooperation, and practical skills.

By engaging directly with concepts, students developed confidence and a love for learning that will inspire them throughout their educational journey.

Celebrating our nation's heritage today inspires the leaders of tomorrow.

Their smiles and enthusiasm brought warmth and happiness to the school.

Our tiny tots rejoiced in a colorful festival celebration filled with fun activities, music, and dance. Through engaging games and creative crafts, the little ones learned about the significance of the occasion while expressing their imagination and energy.

school felicitated students who demonstrated outstanding performance and remarkable improvement. The ceremony recognized hard work, dedication, and resilience, motivating all students to continue striving for excellence.

Celebrating leadership and commitment—appreciating our senior school cabinet members

Potential: annual Summer Camp inverts ordinary breaks into athletic mastery

This season, our campus transformed into a powerhouse of raw energy and athletic development as students from all cohorts dived into our intensive Summer Sports Training Program. Designed to hone physical skills and cultivate grit, the camp provided a structured arena where participants traded leisure for hard work, early mornings,

and deliberate practice. Guided by expert strategists and master trainers, our young athletes pushed past their comfort zones, turning individual effort into shared breakthroughs.

Showing incredible hustle, campers executed complex defensive pressing drills and tactical pick-and-roll maneuvers.

Our junior sports enthusiasts thrived in a vibrant, high-energy environment packed with coordination games, obstacle tracks, and introductory ball skills. Through tailored micro-drills and fun fitness challenges, the children discovered the basic mechanics of movement while expressing boundless enthusiasm.

Outfitted in their training whites, batters and bowlers locked horns in intense net sessions to elevate their competitive edge.

Concurrently, the coaching staff took immense pride in recognizing junior campers who showcased outstanding listening skills, exceptional sportsmanship, and remarkable steps forward in their motor skills.

This closing ceremony celebrated early dedication, setting a joyful foundation for a lifetime of healthy physical activity.

JOINT TRIUMPHS: CELEBRATING ACADEMIC LAUREATES AND HONOURING FAMILY PILLARS

This year, the spotlight shone not only on the scholars who breached academic frontiers but also on the anchors behind their success—their guardians. Recognizing that monumental academic feats are never achieved in isolation, the academy extended its highest commendations to the mothers and fathers whose quiet sacrifices paved the pathway to the podium. The atmosphere remained deeply moving as families stepped onto the stage together, receiving accolades side-by-side to the thunderous applause of educators and peers. This dual celebration honors the midnight oil burned by our students and serves as a magnificent tribute to the patience, guidance, and unwavering faith provided by our parent community.

In a dedicated chapter of the ceremony, the institution turned its gaze to the guardians, presenting them with unique citations of gratitude. From managing stressful exam schedules to providing emotional sanctuary during challenging preparation phases, these parents served as the silent architects of our toppers' success. The academy formally recognized that their enduring encouragement remains the true bedrock upon which these academic summits were built.

DISCIPLINE AND DUTY: SCHOOL NCC CADETS EMBARK ON A JOURNEY OF VALOR AND SERVICE

MALLIHABAD BRANCH

NUR-A

I-A

LKG-A

II-A

UKG-A

III-A

MALLIHABAD BRANCH

IV-A

V-A

VI-A

VII-A

VIII-A

IX-A

MALLIHABAD BRANCH

X-A

XI-A

XI-A

THAKURGANJ BRANCH

NUR-A

NUR-B

NUR-C

LKG A

LKG-B

LKG-C

THAKURGANJ BRANCH

UKG-A

UKG-B

UKG-C

UKG- D

UKG-E

I-A

THAKURGANJ BRANCH

I-B

I-C

I-D

I-E

II-A

II-B

THAKURGANJ BRANCH

II-C

II-D

II-E

III-A

III-B

III-C

THAKURGANJ BRANCH

III-D

IV-A

IV-B

IV-C

IV-D

IV-E

THAKURGANJ BRANCH

V-A

V-B

V-C

V-D

VI-A

VI-B

THAKURGANJ BRANCH

VI-C

VI-D

VII-A

VII-B

VII-C

VII-D

THAKURGANJ BRANCH

VII-E

VIII-A

VIII-B

VIII-C

VIII-D

VIII-E

THAKURGANJ BRANCH

IX-A

IX-B

IX-C

IX-D

IX-E

IX-F

THAKURGANJ BRANCH

XI-A

XI-B

XI-C

XI-D

XI-E

XI-F

लखनऊ, 6 सितंबर, 2026 दैनिक जागरण

सेंट जोसेफ स्कूल (बजाज ग्रुप) की ठाकुरगंज शाखा में शिक्षक दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर सभी शिक्षकों का सम्मान कर उन्हें उपहार दिए गए। समारोह में विद्यालय की संस्थापिका पुष्पलता अग्रवाल, प्रबंध निदेशिका सीमा अग्रवाल एवं प्रबंध निदेशक राजेश अग्रवाल ने सभी शिक्षकों को शिक्षक दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं दीं। वि.

सेंट जोसेफ स्कूल (बजाज ग्रुप) की ठाकुरगंज शाखा में विदाई समारोह आयोजित हुआ।

सेंट जोसेफ बजाज ग्रुप में विदाई समारोह आयोजित

लखनऊ। सेंट जोसेफ स्कूल (बजाज ग्रुप) की ठाकुरगंज शाखा में 12वीं के विद्यार्थियों के विदाई समारोह में हुआ। मिस्टर एंड मिस फोटोजेनिक वर्ग में क्रमशः आबिद अब्बास और नशरा को चुना गया। अतिरिक्त मिस्टर एंड मिस ऑलराउंडर का पुरस्कार आर्यावीर व दीपिका को मिला। संस्थापिका पुष्पलता अग्रवाल, प्रबंध निदेशिका सीमा अग्रवाल एवं प्रबन्ध निदेशक राजेश अग्रवाल रहे।

दैनिक जागरण लखनऊ, 4 सितंबर, 2026

सेंट जोसेफ कालेज में दही मटकी फोड़कर मनाया उत्सव

लखनऊ : श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर सेंट जोसेफ इंटर कालेज, (बजाज ग्रुप) ठाकुरगंज के प्राइमरी एवं सीनियर कैंपस में विद्यालय प्रबंधन ने उल्लासपूर्ण 'दही मटकी फोड़' कार्यक्रम का आयोजन किया। नन्हे-मुन्ने विद्यार्थियों ने रंग-बिरंगे परिधानों में श्रीकृष्ण एवं राधा का रूप धारण कर कृष्णमय वातावरण बना दिया। विद्यार्थियों ने दही मटकी फोड़कर जन्माष्टमी के उत्सव को जीवंत कर दिया। विद्यालय की संस्थापक प्रबंधक पुष्पलता अग्रवाल एवं प्रबंधक सीमा एवं राजेश अग्रवाल ने विद्यार्थियों को अपना स्नेह एवं आशीर्वाद दिया। वि.

www.jagran.com

एक नजर में

आर्यवीर मिस्टर व दीपिका मिस आलराउंडर बनीं

लखनऊ: सेंट जोसेफ स्कूल (बजाज ग्रुप) की ठाकुरगंज शाखा में कक्षा 12वीं के विद्यार्थियों का विदाई समारोह किया गया। प्रबंध निदेशिका सीमा अग्रवाल व प्रबंध निदेशक राजेश अग्रवाल की उपस्थिति में बच्चों ने नृत्य व रैंप वाक किए। मिस्टर फोटोजेनिक आबिद अब्बास व मिस फोटोजेनिक नशरा चुने गए। मिस्टर आलराउंडर आर्यवीर व मिस आलराउंडर दीपिका बने। संस्थापिका पुष्पलता अग्रवाल ने विचार साझा किए। वि.

लखनऊ | मंगलवार • 31.03.2026
amarujala.com/lucknow

कैंपस डायरी

बच्चों के साथ अभिभावकों का सम्मान

संवाद

लखनऊ। सेंट जोसेफ स्कूल (बजाज ग्रुप) की ठाकुरगंज शाखा में सोमवार को नर्सरी से लेकर नौवीं और 11वीं कक्षा के विद्यार्थियों का अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर अभिभावकों को भी सम्मानित किया गया। विद्यालय की प्रबंध निदेशिका सीमा अग्रवाल और प्रबंध निदेशक राजेश अग्रवाल ने मेधावियों को पुरस्कार व सर्टिफिकेट देकर उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। (संवाद)

धूमधाम से मना अभिनंदन समारोह

■ NBT रिपोर्ट, लखनऊ : सेंट जोसेफ स्कूल (बजाज ग्रुप) की ठाकुरगंज शाखा में सोमवार को कक्षा नर्सरी से लेकर नवी और ग्यारहवी के छात्र छात्राओ का अभिनंदन समारोह हुआ। इस दौरान अभिभावक भी मौजूद रहे। अभिभावकों का भी सम्मान किया गया। विद्यालय की प्रबंध निदेशिका सीमा अग्रवाल और प्रबंध निदेशक राजेश अग्रवाल ने मेधावी छात्र छात्राओ को पुरस्कार एवं सर्टिफिकेट दिए।

सेंट जोसेफ में मेधावियों का अभिनंदन

■ NBT न्यूज, लखनऊः सेंट जोसेफ स्कूल (बजाज ग्रुप), ठाकुरगंज शाखा मे छात्र-छात्राओ का अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। विद्यालय की प्रबंध निदेशि... निदेश... को पुर...

हिन्दुस्तान www.livehindus

लखनऊ, सोमवार, 15 सितंबर 2025 08

...जोसेफ स्कूल (बजाज ग्रुप) में रविवार को 10 वीं और 12 वीं ...भिनंदन समारोह धूमधाम से मनाया गया।

प्रमाण पत्र एवं पदक दिए गए

...स्थित सेंट जोसेफ स्कूल (बजाज ग्रुप) में रविवार को ...बाद शाखा के 10 वीं और 12 वीं के मेधावी विद्यार्थियो का ...धाम से मनाया गया। उत्तरी क्षेत्र के विधायक डॉ. नीरज बोरा ...देशक राजेश अग्रवाल ने 130 मेधावी विद्यार्थियों को सूटकेस, ...कर सम्मानित किया। स्कूल की संस्थापिका पुष्पलता ...चिव अतुल गुप्ता, समाज सेविका सबीहा अहमद रहीं।

4 www.lucknow.nbt.in

सेंट जोसेफ स्कूल में होली की धूम

■ NBT न्यूज, लखनऊः ठाकुरगंज स्थित सेंट जोसेफ स्कूल (बजाज ग्रुप) मे सोमवार को होली मनाई गई। इस दौरान छात्र-छात्राओ और शिक्षको ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमो के जरिए प्रतिभा दिखाई। विद्यालय की संस्थापिका पुष्पलता अग्रवाल, प्रबंध निदेशिका सीमा अग्रवाल और राजेश अग्रवाल ने बच्चो को अबीर-गुलाल लगाकर सुख और सद्भाव का संदेश दिया। मैनेजमेंट ने सभी के लिए सुरक्षित और इको-फ्रेंडली होली की कामना करते हुए शुभकामनाएं दी।

amarujala.com/lucknow

लखनऊ | मंगलवार • 03.03.2026

अमर उजाला 8

सेंट जोसेफ स्कूल ठाकुरगंज (बजाज ग्रुप) में उत्साह के साथ मनाई गई होली। स्रोत : स्कूल

सेंट जोसेफ स्कूल में मनाया गया वार्षिकोत्सव

■ NBT न्यूज, लखनऊः सेंट जोसेफ स्कूल (बजाज ग्रुप) की ठाकुरगंज शाखा मे शुक्रवार को विद्यालय का वार्षिकोत्सव 'रिफ्लेक्शन भाग 1 हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर स्कूल के बच्चो ने अनेक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए। रंग-बिरंगे परिधानो मे सजे बच्चो ने अपनी प्रस्तुतियो से सभी का मन मोह लिया।

सेंट जोसेफ स्कूल में चयनित विद्यार्थियों को दिए गए बैज

लखनऊ : सेंट जोसेफ स्कूल (बजाज ग्रुप) की ठाकुरगंज शाखा में अलंकरण समारोह हुआ। हेड ब्वाय, हेड गर्ल, स्पोर्ट्स कैप्टन एवं अन्य पदों के लिए चयनित विद्यार्थियो को बैज दिए गए। इस वर्ष गौरव सिंह हेड ब्वाय और मरियम हेड गर्ल चुनी गईं सभी छात्र छात्राओं ने विद्यालय के प्रति अपने कर्तव्यनिष्ठ होने एवं विद्यालय का अनुशासन बनाए रखने में अपने सहयोग देने की प्रतिज्ञा ली। इस अवसर पर विद्यालय की संस्थापिका पुष्पलता अग्रवाल ने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। विद्यालय की प्रबंध निदेशिका सीमा अग्रवाल एवं प्रबंध निदेशक राजेश अग्रवाल ने सभी विद्यार्थियो को कर्तव्यपरायणता एवं देशभक्ति के लिए प्रेरित किया। वि.

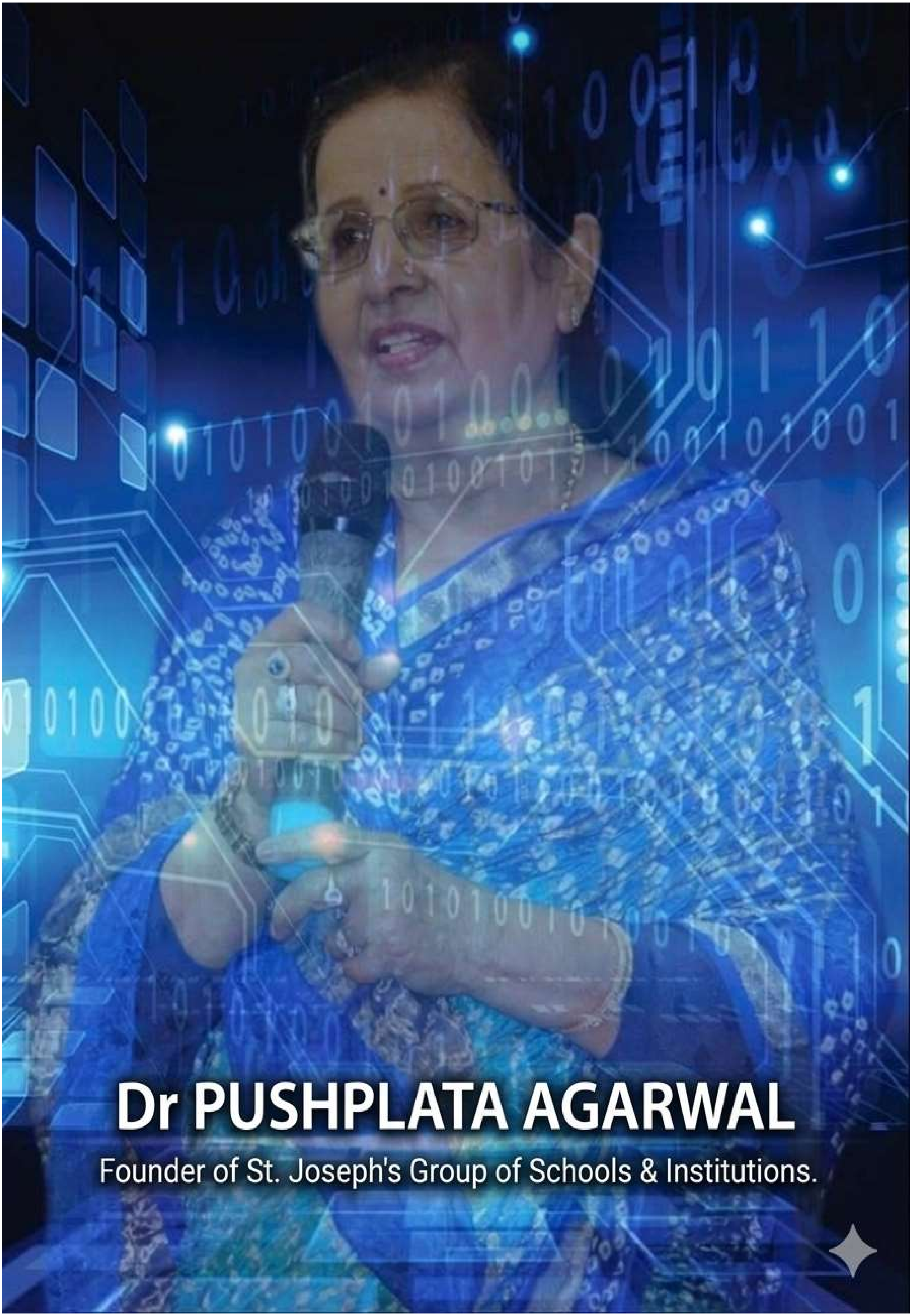
Dr PUSHPLATA AGARWAL
Founder of St. Joseph's Group of Schools & Institutions.